वर्ष 29 | आषाढ़-श्रावण | जुलाई -2024 | अंक 07 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2024-2026

मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नम:

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

सत्यप्रेमी को कभी कहीं भी कोई भय नहीं होता वह सदैव निर्भय ही होता है। जिसने गलत किया ही नहीं है उसे डर भी किस चीज का ? डर तो उसे होता है जो झूठ को सच बताने पर तुला हो क्योंकि, उन्हें सदैव सचेत रहना होताा है कहीं हमारी पोल खुल न जाये।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

दाराणि य सुया चेव, मित्ता य तह बंधवा।
जीवंतमणुजीवंति, मयं नाणुव्वयंतिय ॥

स्त्री और पुत्र, मित्र और बांधव जीवित व्यक्ति के साथ जीते है। मरने पर इनमें से कोई साथ नहीं जाता। - उत्तरा. सूत्र, 18.14

पाथेय

नव सृजन के महत् कार्य हेतु हमें करना होगा अन्वेषण, नई-नई पद्धतियों एवं कार्य प्रणालियों को हमें ढालना होगा अपने अस्तित्व के प्रत्येक अणु को नए सॉचे में और खोलना होगा अपनी सत्ता के प्रत्येक अंश को प्रकाश की ओर, जिससे हम एक नई शक्ति के अवतरण का कर सके स्वागत। वह शक्ति जो अभी तक अनभिज्ञ है इस पृथ्वी जीवन के लिए। हे नाथ, तुम्हारे इस नवसृजन के कार्य को सम्पन्न करने के लिए मैंने स्वयं को समर्पित करा दिया है पाकर तुम्हारा आदेश। चूंकि तुमने अपने प्रतिनिधि के रुप में मुझे किया है नियुक्त, अब तुम ही मुझे प्रदान करो इसका आवश्यक ज्ञान एवं इसके साधन जिससे वह व्यक्ति परम सत्ता, समग्रता से तुम्हारे प्रकाश से होकर भरपूर कर सके प्रबल प्रयास उस परा शक्ति के अवतरण हेतु। हे प्रभु, मुझे प्रदान करो नई अन्तदृष्टि, नवीन प्रणाली एवं नवीन रास्तों के सृजन का ज्ञान।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-29 आषाढ़-श्रावण जुलाई 2024 अंक-7

विषय सूची

1-	शाश्वत संदेश, पाथेय	3
2-	विषय सूची	4
3-	चार्तुमास-अच्छाई ग्रहण करने का प्रशिक्षण शिविर-(सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन	5
4-	आनंद पर्व चार्तुमास.... श्रीमती प्रभा-कल्याणमल जैन	6
5-	क्रोध का नतीजा.... यशपाल जैन , हाँ ! यह समझने जैसा है...! कृतज्ञता की भावना- श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र	7-8
6-	चार्तुमास की महत्ता, आठ अभव्य जीव ?, शिखध्वज	9-10
7-	जैन धर्म में चार्तुमास का महत्व, 18 पाप स्थान, चार्तुमास वर्षायोग धर्म विकास की आधारशिला	11-12
8-	आईये ! गौरवमय जैन इतिहास को जाने....!, तो जीवन निष्फल है	13
9-	आईये अभक्ष्य सामग्री को पहचान कर त्याग करें, चार्तुमास के चार चरण, पाप का बाप-लोभ	14
10-	मंदिरजी में हो रही अशातना को रोकिये....	15
11-	क्यों मनाया जाता है चार्तुमास पर्व ? मोम को पिघलने में आखिर वक्त ही कितना लगता है !	16
12-	जैन परम्परा में चार्तुमास एक विश्लेषण, असावधानी, दुर्लभ समकितरत्न	17-18
13-	संत शब्द सुधा सागर...., बड़ों से तो बालक अच्छे	19-20
14-	अंतिम चौमासे में 55-55 पुण्य-पाप का अध्ययन कर भगवान महावीर मोक्ष पधारे : सुधर्मास्वामी प्रभु महावीर के पाट पर विराजे- शांतिलाल सगरावत	21
15-	चार्तुमास में क्या करे : पूज्यनीय साधु-साध्वियों से प्रार्थना और निवेदन...., दुनियादारी के रंग	22
16-	चार्तुमास-एक भव्य काल...., हिंसक से हीन कोई नहीं	23
17-	चार्तुमास में क्या करें हम और आप.....	24
18-	जीव दया फण्ड (विज्ञापन)	25
19-	वर्गपहेली- 350 - जयंतीलाल जैन,रतलाम	26
20-	ज्ञान गंगोत्री- 350-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा.	27
21-	शासन-समाचार	28-41
22-	हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है, धर्म में स्थित कौन ?-पुष्पमाला प्रकरण	42

संपादकीय

चातुर्मास -अच्छाई ग्रहण करने का प्रशिक्षण शिविर

वह धरती धन्य होती है जो संतों के चरण स्पर्श करती है वह श्रीसंघ धन्य और गौरवशाली ,सौभाग्यशाली होते है जहां संत शिरोमणि चातुर्मास-वर्षायोग में धर्माराधना करते है। संतों की रत्नत्रय से पवित्र बनी काया का संस्पर्श पाकर,सत्संग पाकर श्रीसंघ का सौभाग्य जाग्रत हो जाता है। गुरू भगवंतों के चातुर्मास की स्वीकृति श्रीसंघ में त्यौहार का वातावरण बना देती है। प्रवेश के समय वंदनवार सजते हैं। ढोल ढमाके बजते है तो लगता है कि धर्म का मौसम आ गया है। धर्म के चार माह के सीजन में गुरूभगवंतों के सानिध्य का प्रभाव समाज, श्रीसंघ पर होता है। एक प्रकार से वर्षायोग, चातुर्मास आहार-विचार-व्यवहार और व्यापार की शुद्धि से मानव मन को जोड़कर उसके जीवन को हराभरा कर देता है। वर्षा के मौसम में होने वाली प्रचुर जीवोत्पति की हिंसा से बचने के लिये अहिंसा के लिये, अहिंसा के आराधक श्रमण-श्रमणी चातुर्मास में एक स्थान पर आषाढ़ सुदी चतुर्दशी से लेकर कार्तिक पूनम तक स्थिरता रखकर धर्म, साधना आराधना से श्रावक-श्राविका को भी जोड़कर साधनारत रहते है। पर्युषण महापर्व सम्पूर्ण चातुर्मास का सार होता है। पर्व के इन आठ दिनों में शायद ही कोई दुर्भाग्यशाली जीव होता होगा जो परमात्मा के दर्शन-वंदन के लिये जिनालय नहीं जाता होगा या धर्म से नहीं जुड़ता होगा। धार्मिक कार्यक्रम की तो जैसे बाढ़ ही आ जाती है। व्रत, उपवास, बड़ी तपस्या और धर्माराधना से श्री संघ सरोबार हो उठते हैं।

जहां गुरू भगवंतों का चातुमार्सिक वर्षायोग होता है उस नगर श्रीसंघ में तो त्यौहार का वातावरण बन जाता है, श्रीसंघ बड़े उत्साह और जतन से साधु-साध्वी भगवंतों के चातुर्मास कराने के प्रयास करते है, कई बार उनका यह पुरूषार्थ कामयाब हो जाता है और कई बार तो फेल भी हो जाते हैं। अगर आपका श्रीसंघ का पुरूषार्थ गुरूभगवंतों का चातुर्मास पाने में सफल हो गया है तो अब हम सबको उस चातुर्मास से कुछ पाने का पुरूषार्थ करना होगा। वर्षायोग स्वयं को बदलने का एक अवसर देता है।

अगर हम सबका सहयोग और सहकार चातुर्मास के लिये उपलब्ध हो जाये तो चौमासा बताशे की तरह मीठा हो जायेगा। धन को रखने के लिये तिजोरी की आवश्यकता होती है उसी तरह से जीवन की यात्रा को सुरक्षित बनाने के लिये सत्संग की आवश्यकता होती है। सत्संग संस्कार देता है,अतः इस वर्षायोग, चातुर्मास को हमें अपना बनाना है।

हमारी जिंदगी में तीन रोग है, जन्म-जरा-मरण साधन भी तीन है ज्ञान-ध्यान और योग। स्वस्थ बन रहने के लिये पद्धति भी एलोपोथिक, होमियोपैथिक, आयुर्वेदिक तीन है, इसी तरह से देव-गुरू-धर्म भी तीन है जिनका चातुर्मास में महत्व बढ़ जाता है। पर वर्षायोग चातुर्मास के चार माह अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। अगर किसान और धर्मिष्ठ इन चार माह में चुक जाता है तो पूरा साल ही बेकार चला जाता है। इसीलिये आषाढ़ में आलस्य नहीं करना, श्रावण में श्रमण के चरण में ही रह कर अपनी श्रद्धा और समर्पण की भेंट चढ़ना,भादवा में भद्र बनकर भक्ति करते हुए पर्युषण पर्व में तप त्याग करना और कुंवार माह आने पर हमें यही लगना चाहिये कि आषाढ़-श्रावण भादवा इन तीन महिनों में धर्माराधना के समय का सही उपयोग नहीं किया तो कुंवारें अर्थात् खाली ही रह जाऐंगें। तो यह चार माह हमें यही प्रेरणा देते है कि जीवन में चातुर्मास के चार माह में धर्म और गुरू भगवंतों से अच्छाई ग्रहण कर ऐसा कर गुजरें कि परमात्मा भी हमारे निकट पास आ जायें। चातुर्मास के सारथी बनकर तो देखें, जीवन में परिवर्तन होकर रहेगा। चातुर्मास पुण्य उदय की मंगल बेला है, पुण्य ही जीवन की धरोहर है, पुण्य संचित करने का योग संयोग देने चातुर्मास आया है, ऐसा कौन मूर्ख होगा जो जीवन में पुण्य संचय नहीं करना चाहेगा ?

चातुर्मास त्यौहार का मौसम है जहां देखो वह धर्म ही धर्म दिखाई देता है। अच्छाईयों को ग्रहण करने के लिये तो प्रशिक्षण लेना पड़ता है परन्तु बुराईयां तो सहज आ जाती है। चातुर्मास अच्छाई ग्रहण करने का प्रशिक्षण शिविर है। धर्म की शरण स्वीकार लेने के बाद बुराईयों को छोड़ना नहीं पड़ता है बल्कि बुराईयां अपने आप छुटने लगती है। जहां कुछ छोड़ना नहीं पड़े और अपने आप ही छूट जाये इसी का नाम धर्म है, राग आग जैसा लगने लगे तो समझ लेना कि मुझमें धर्म का अंश आ गया है। धर्म को सिर की पगड़ी मत बनाना, धर्म तो शरीर की चमड़ी मानना जो एक बार चढ़ गये तो उतरनेवाली नहीं है।

आप हम सब जीवन में बहुत भटक लिये है अब और कहां-कितना भटकेंगे और कब तक? तो आईये इस बार के चातुर्मास में निश्चय कर लें कि हम जीवन में एक मात्र मंत्र महामंत्र नवकार को मानेंगे, एक मात्र ग्रंथ आगम पर विश्वास रखेंगे और एक मात्र पंथ-प्रभु श्री महावीर के पंथ पर ही चलेंगे। भटकाव समाप्त होते ही आप एक विशिष्ट अनुभूति अपने जीवन में पायेंगे।

चलो यहीं कर लें।

-डॉ.सुभाष जैन

आनंद पर्व चातुर्मास....

✻ श्रीमती प्रभा-कल्याणमल जैन, देवास

चातुर्मास जीवन में नई दिशा, नई ऊर्जा, नया उत्साह नई चेतना देनेवाला पावन पर्व है। यह एक ऐसा पर्व है जो विश्व में सर्वाधिक समय तक चलता है, अर्थात् बारह महिनों में से चार माह मनाये जानेवाला पर्व, अहिंसा धर्म की पालना के लिये जैन धर्म में एक ही स्थान में रहकर धर्म आराधना करने का विधान है। इसीलिये हमारे गुरु भगवंत एक ही स्थान में प्रवास कर अपनी आत्म साधना में तल्लीन रहते हैं और जिनशासन की प्रवचनों के माध्यम से, शिविर के माध्यम से हमें जाग्रत करते हैं।

चातुर्मास एक आनंद पर्व है,आध्यात्मिक पर्व है, अहिंसा पर्व है, धार्मिक अनुष्ठान का पर्व है, आराम का पर्व है, तप पर्व है, दर्शन पर्व है, उल्लास उमंग का पर्व है, श्रावण भाद्रपद आश्विन और कार्तिक ये चार मास चातुर्मास के होते है। चातुर्मास का मुख्य लक्ष्य है, आत्म जागरण अर्थात् हमारे अंदर काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि जो विकृतियां होती है उन्हें दूरकर स्वयं अपनी आत्मा को दुर्गुणों से दूर हटा सद्गुणों की ओर अग्रसर हो।

कुछ ही दिनों बाद चातुर्मास प्रारंभ होने जा रहा है, हमें चातुर्मास का स्वागत, अभिनंदन किस प्रकार से करना है, महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान आकर्षित करना चाहूंगी।

1- चातुर्मास में जहां भी साधु संत विराजित है, प्रवचन दर्शन का लाभ अवश्य ले।

2- हम बच्चों को भी धर्मस्थान में अवश्य ले जावे यदि किस कारणवश बच्चे प्रतिदिन धर्मस्थान में नहीं जा पावे तो उनको प्रवचन के माध्यम से उपदेश, कथा आदि बच्चों को समय मिलने पर सुनाये।

3- हम आवेश को नियंत्रित करें- छोटी-छोटी बातों पर क्रोधित होना, उग्र होना, आवेश में आना उचित नहीं, अतः क्रोध पर नियंत्रण रखें।

4- हमारी सामायिक में समता भाव ही शुद्ध सामायिक हो।

5- हम चातुर्मास में अपने समय का सही स्थान में निवेश करें, अर्थात् अपना मूल्यवान समय हम टीवी, मोबाईल आदि में न देकर कुछ नया ज्ञानार्जन करने का लक्ष्य रखें।

6- वर्तमान में हमारे गुरु भगवंत ही हमारे तीर्थकर है, तीर्थकरों के प्रतिनिधि है, साक्षात कल्पवृक्ष है, उनके द्वारा फरमाई जिनवाणी पर श्रद्धा के भाव रखें।

7- चातुर्मास में गुरु भगवंतों की गोचरी पानी का भी विशेष स्थान रखना हमारा परम कर्त्तव्य है।

8- चातुर्मास में तप की विशेष आराधना होती है जिससे जितना भी बने वह तप करें, आपनी आत्मा के कर्मो की निर्जरा करें।

9- छोटे-छोटे नियम प्रतिदिन अपने जीवन को संवारते है, त्याग, प्रख्यान पौषध, प्रतिक्रमण करने का लक्ष्य रखें।

10- एक विशेष महत्वपूर्ण बात यह है कि कई क्षेत्रों में जहां साधु-साध्वियों के चातुर्मास होते है, प्रवचन के पश्चात गौतम प्रसादी (भोजन) की भी व्यवस्था रहती है, हम हमारे धार्मिक भाई-बहनों को देखते है, प्रवचन का समय समाप्ति पर होगा तब आयेंगे और 5-10 मिनिट में बेहतर भोजन कर लिये चले जाते है। ऐसा करना क्या उचित है। हम स्वयं अपने और अपनी आत्मा के साथ धोखा कर रहे हैं।

11- हमारे हृदय में प्राणमात्र का समावेश हो, जीव दया दान, अनुकंपा, सुपात्र दान हमारा लक्ष्य हो।

12- आज की युवा पीढ़ी धर्म से विमुख होती जा रही है, वर्षावास में गुरु भगवंतों के दर्शन, प्रवचन, मंदिर में दर्शन पूजा पाठ, धार्मिक अनुष्ठानों में उनको जाने की प्रेरणा दें, जैसे पिक्चर जाना, पार्टी में जाना, घूमने जाना आदि आदि सब कार्य वे अपनी पसन्द के करते है, वैसे ही धर्म को भी अपने जीवन में लक्ष्य बनायें, गुरु शरण में अवश्य जाएं। जिनवाणी का एक अंश भी जीवन को सही दिशा दे सकता है।

13- चातुर्मास हम सभी को एक छत्र के नीचे लाने का प्रयास करना है, सामाजिक विक्रतियों, समस्त कलहों को मिटाकर एकता, संगठन, प्रेम आदि से ओत-प्रोत करना है।

अंत में मैं यही कहना चाहूंगी कि हम वीतराग धर्म के मर्म को समझते हुए सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चारित्र तप को धारण करते हुए आनंद पर्व चातुर्मास को सफल बनाकर मोक्ष मार्ग के अनुगामी बनें। हमें हमारे पुण्योदय से जैन धर्म में जन्म मिला, हम परम उपकारी भगवंतों की जिनवाणी श्रवण कर उस पर श्रद्धा भाव से नमन्, वंदन-वंदन कर जीवन को सार्थक बनाएं।

आया है आनंद पर्व प्रवेश, गुरु भगवंत चातुर्मास का।
आओ अंधेरा भगाएं जलाकर दीपक अंतर के प्रकाश का॥

क्रोध का नतीजा....

✱ यशपाल जैन

गृहस्वामिनी ने निगाह ऊपर उठाई तो देखा, सामने मुनिराज खड़े हैं।

नमन करके कहा- ''मुनिराज, आज्ञा ?'' मुनिराज ने उसकी ओर देखा। बोले- ''हमारे एक साधु का शरीर जल गया है। उसके लिए लक्षपाक तेल की आवश्यकता है। तुम्हारे यहां है क्या ?''

गृहस्वामिनी के घर में लक्षपाक तेल था। उसने अपना अहोभाग्य माना और विनत स्वर में कहा- ''जी हाँ महाराज, है। मैं अभी दासी से मंगवाकर देती हूं।''

दासी तुरन्त कोठार में गई और वहां से तेल भरा पात्र लेकर लौटी। अचानक जल्दी में उसके हाथ से तेल का पात्र छूट गया और सारा तेल धरती पर फैल गया। वह झट से दूसरा पात्र लाई, लेकिन संयोग से तेल से चिकने फर्श पर उसका पैर फिसल गया और वह पात्र सहित धरती पर गिर गई। अब तो मारे घबराहट के उसका बुरा हाल हो रहा था। डर भी रही थी। गृहस्वामिनी ने यह देखा तो उसे क्रोध नहीं आया। उलटे उसने पूछा- ''क्यों ? तुझे चोट तो नहीं आई ?'' दासी ने कहा, नहीं।

''तो जाओ। तीसरा कलश भीतर रखा है। उठा लाओ।''

दासी तीसरा कलश उठाकर लाई, पर वह भी उसके हाथ से छूट गया। अब तो उसके प्राण मुंह को आ गये। पर गृहस्वामिनी तनिक भी विचलित नहीं हुई। बोली- ''कोई बात नहीं। मैं स्वयं ही कलश उठा लाती हूं।''

बस एक कलश बचा था। गृहस्वामिनी अंदर गई और कलश लाकर मुनिवर के सामने रख दिया। कहा-''मुनिवर! आपको जितना चाहिए, उतना तेल ले लीजिए।''

मुनिवर ने तेल लेते हुए आश्चर्य से चकित होकर पूछा- ''इतना मूल्यवान तेल तीन बार गिरकर नष्ट हो गया, पर तुम्हें जरा भी क्रोध नहीं आया। ऐसा कैसे हुआ ?''

गृहस्वामिनी ने कहा- ''महाराज ऐसा अकारण नहीं हुआ। मैं क्रोध के दुष्परिणाम भोग चुकी हूँ। इसलिए क्रोध से हमेशा बचती हूं।''

मुनि ने विस्मत होकर पूछा- क्या हुआ ?

गृहस्वामिनी ने कहा- ''मुनिवर ! मैं उज्जयिनी के धान्ना सार्थवाह की इकलौती बेटी हूं। मेरे माता-पिता मुझे बड़ा प्यार करते थे। उन्होंने मेरी सारी इच्छाएं पूरी की। कोई मुझे तुकारा नहीं दे सकता था। इससे मेरा नाम ही अंतुकारी भट्टा पड़ गया। जब मैं बड़ी हुई तो राजा का मंत्री मुझसे विवाह करने का इच्छुक हो गया। उसने इस बारे में मेरे पिता से चर्चा की तो उन्होंने कहा- ''मैं अपनी बेटी का विवाह उसके साथ करुंगा, जो मेरी बेटी के कहने पर चलेगा।'' मंत्री ने उनकी बात मान ली। हमारा विवाह हो गया। मैंने अपने पति से कहा- '' देखो ! आपको रात को अपने घर पर रहना है और कहीं नहीं जाना है।'' पति ने मेरी बात मान ली। वह सूर्यास्त से पहले ही घर पर आ जाता है।

एक दिन किसी ने राजा के कान भर दिये कि आपका मंत्री तो पत्नी का दास है। वह उसके इशारे पर नाचता है। अगर आपको मेरी बात पर भरोसा नहीं है तो उसे कल घर मत जाने दीजिए। अगले दिन राजा ने यही किया। उसने कुछ काम देकर मेरे पति को रोक लिया। रात हो गई और वह घर नहीं पहुंचा तो मैं क्रोध से पागल हो गई।

काम निबटा कर जब वह घर पहुंचा तो आधी रात बीत चुकी थी। उसने दरवाजा खटखटाया। मैंने दरवाजा नहीं खोला। मेरे सिर पर तो क्रोध का भूत सवार था। उसने देर होने का कारण बताया, माफी मांगी। पर मैंने उसकी एक न सुनी। दरवाजा तो खोल दिया, लेकिन मैं घर से बाहर निकल आई। चारों ओर अर्द्धरात्रि का सन्नाटा छाया था। मैं घर से बाहर तो चली आई, पर मुझे सूझ नहीं रहा था कि कहां जाऊं। रास्तों का मुझे पता नहीं था।

तभी मुझे रास्ते में छः लोग मिले। वे चोर थे। वे मुझे अपने अड्डे पर ले गये। उनके स्वामी ने जब मुझे देखा तो मेरे जवान शरीर और रुप रंग के कारण मुझ पर मोहित हो गया। उसकी नीयत देखकर मैंने उसे फटकारते हुए कहा- ''अगर मेरे शरीर को हाथ लगाया तो अपने प्राण दे दूंगी। तूने समझ क्या रखा है ?''

कहावत है- ''चोर के पैर नहीं होते।'' मेरे रोष को देखकर उसकी सिट्टी गायब हो गई। फिर भी उसने अपना इरादा नहीं छोड़ा। उसकी माँ यह देख रही थी। उसने आगे आकर अपने बेटे से कहा- ''तू यह क्या कर रहा है ? यह ऐसी-वैसी स्त्री नहीं है। यह सती है। अगर तूने इसे सताया तो उसका फल अच्छा नहीं होगा।''

माँ की बात का उस पर कुछ प्रभाव पड़ा और वह शान्त हो गया। अगले दिन वह मुझे बेचने के लिए बाजार ले गया। नीलामी के लिए बोलियां बोली गई और अंत में एक सार्थवाह ने बीस हजार मोहरें देकर मुझे खरीद लिया। मैं बहुत चीखी-चिल्लाई, लेकिन किसी ने मेरी सहायता नहीं की। वह सार्थवाह बड़ी ही दुष्ट प्रवृत्ति का था। उसने अपनी इच्छापूर्ति करनी चाही, पर मैंने उग्र रुप धारण कर के उसके हौसले को परास्त कर दिया। तब उसने मुझे चाण्डाल के हाथों सौंप दिया।

चाण्डाल बड़े ही चाण्डाल होते हैं। जब अच्छे खाने से मेरे शरीर में खून बढ़ गया और मेरा बदन लाल हो गया तो एक चाण्डाल ने छुरे से मेरे अंगों को चीरकर खून निकाला। मेरे खून से उन्होंने कपड़े रंगे और उस रंग को देखकर उन्हें बड़ा हर्ष हुआ, क्योंकि कपड़े अब बहुत मूल्यवान हो गये थे।

यह क्रम बराबर चलता रहा। मेरा हाल बेहाल हो गया, पर उनका यह क्रूर कर्म रुका नहीं। इस बीच मेरे घर वालों ने देखा कि मैं घर छोड़कर कहीं चली गई हूं, तो उन्होंने मेरी खोज शुरु की। पर चाण्डालों ने मुझे ऐसा जकड़ रखा था कि किसी का वहां पहुंच कर मेरा पता लगाना बहुत कठिन था। घर वाले घूमते-घूमते हैरान हो गये। फिर भी उन्होंने आशा नहीं छोड़ी।

एक दिन मेरा एक नजदीक का संबंधी घूमता-घूमता उस चाण्डाल के घर आ गया। मुझे देखते ही उसने पहचान लिया। उसने पहचान लिया। उसने मुखिया से बात की और उसने जो मांगा, उसे देकर मुझे वहां से छुड़ा लाया। मैं बार-बार सोचती कि अगर मैंने क्रोध न किया होता तो मुझे इतनी दारुण यातनाएं क्यों भोगनी पड़ती।

यह सब सुनाकर अंतुकारी भट्टा ने कहा- मुनिवर ! घर आकर मैंने संकल्प किया कि मैं किसी भी हालत में क्रोध नहीं करुंगी। आपने जो देखा, वह मेरे उसी संकल्प का परिणाम है।

मुनिवर ने उसके संकल्प की भूरि-भूरि प्रशंसा की और मुदित होकर अपने स्थान पर लौट गये।

हाँ ! यह समझने जैसा है...!

- जब सर्वज्ञ पहले सब देख ही चुके है तो फिर हमें क्या देखना है ?
- चिन्ता चिन्तन न करने वालों को होती है।
- साधर्मी उपगूहन स्थितिकरण के लिये होते है द्वेष बैर के लिए नहीं।
- जीवन में दूरदृष्टि न हो तो अप्रभावना होती है।
- भेद अभेद को जानने के लिए है, अभेद में भेद के लिए नहीं।
- बीमारी अर्थात् असावधानी का फल।
- जान पहचान दुनिया से नहीं, अपने से बढ़ाईये।
- समझ में ही समाधान है।
- कषाय की वृद्धि जिंदगी की हार है।
- धर्म करने की नहीं, समझने की चीज है।

कृतज्ञता की भावना

✻ श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र

घटना सन् 1874 की है। पोलैंड निवासी दुनिया के मशहूर संगीतकार पेड्रेवस्की अमेरिका की यात्रा पर थे। उनकी इस यात्रा का उद्देश्य संगीत आयोजनों में हिस्सा लेना था। उनके कार्यक्रम का आयोजन कौन कराएगा, इसे लेकर हर बार स्पर्द्धा रहती थी। इस बार उन्होंने एक साधारण लुहार युवक को यह जिम्मेदारी दी ताकि इसी बहाने उसकी कुछ मदद हो जाए। लेकिन प्रतिद्वंद्वियों की साजिश के कारण बहुत ही कम टिकट बिके। समापन के बाद युवक संगीतकार पेड्रेवस्की के कार्यक्रम की फीस देने आया। सामान्यत पेड्रेवस्की के हर कार्यक्रम में आठ-दस हजार डॉलर इकट्ठा हो जाते थे। इसमें से 2000 डॉलर तक आयोजक को मिल जाते थे लेकिन इस बार मात्र तीन हजार डॉलर ही इकट्ठा हो पाए। युवक ने टिकट बिकने से जो तीन हजार डॉलर मिले उसे पेड्रेवस्की के आगे रख दिए। वयोवृद्ध संगीतकार पेड्रेवस्की ने पूछा, हॉल का किराया कैसे चुकाओगे ? निराश युवक बोला किसी तरह परिश्रम कर कुछ वर्षो में चुका दूंगा। पेड्रेवस्की को तो उस युवक की मदद करनी थी। वह बोले, निराश मत हो ! यह राशि भी ले जाओ। हॉल का किराया चुका दो और नया धंधा शुरु करो। वह युवक अश्रुपूरित नेत्रों से उन्हें धन्यवाद देकर चला गया। समय ने पलटा खाया। वही युवक हर्बर्ट हूवर अमेरिका का 31 वां राष्ट्रपति बना। 1930 की विश्वव्यापी मंदी में जब यूरोपीय राष्ट्र अमेरिका का ऋण नहीं चुका पा रहे थे, तब राष्ट्रपति हर्बर्ट हूवर ने पोलैंड के संगीतकार पेड्रेवस्की को याद कर दस करोड़ डॉलर की राहत राशि पोलैंड सहित अन्य राष्ट्रों को प्रदान की। हूबर को इस कार्य के लिए याद किया जाता है। लेकिन उन्होंने बड़ी विनम्रता पूर्वक एक ही बात कही- मैं आज जो भी हूं उन ख्यातिलब्ध संगीतकार पेड्रेवस्की के कारण हूं। मैंने तो महज ऋण चुकाया है।

चार्तुमास की महत्ता

शास्त्रीय विधान अनुसार जानिए, जैन धर्म में चार्तुमास की महत्ता-

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान श्रीआदिनाथ से प्रारम्भ हुआ चार्तुमास पर्व आज तक निर्बाध रुप से जारी है जिसका निर्वहन एवं अनुसरण आज भी प्रत्येक साधु-संत करते है। पूर्णतः अहिंसा पर आधारित जैन धर्म धार्मिक भावनाओं से भरा हुआ धर्म है। प्रतिवर्ष वर्षा योग में जैन साधु-साध्वी एक ही स्थान पर रहकर धर्म की गंगा बहाने, धर्म का पालन करने व श्रावक-श्राविकाओं को कराने, प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर ले जाने हेतु चार्तुमास किया जाता है।

साधु-साध्वियों एवं श्रावक-श्राविकाओं के लिए आत्म साधना का प्रतिबिम्ब होता है चार्तुमास। यह साधु-साध्वियों सहित सभी को अहिंसा का पालन करने तथा मन, वचन एवं काया के निग्रह हेतु चार्तुमास किया जाता है। जिन धर्म का मूल स्त्रोत अहिंसा है। अहिंसा का अर्थ जहां तक हो सकें अपनी क्रियाओं द्वारा किसी की भी हिंसा न हों क्योंकि इस वर्षाकाल में असंख्य जीवों की उत्पत्ति होती है इसलिए अहिंसा का विशेषतौर पर ध्यान दिया जाता है। जब आप विचरण करेंगे तो जीवों की हिंसा होगी इसलिए साधु-संत एक ही स्थान पर चार माह रहकर जिनवाणी के सिद्धांतों एवं जैन धर्म की वाणी का प्रचार-प्रसार करते हैं।

भारत में विभिन्न धर्मो के संत महात्माओं की अपनी-अपनी मान्यताओं और धार्मिक विधानों के अनुसार साधना पद्धतियां, अनुष्ठान और निष्ठाएं परिपक्व हुई हैं। इन पद्धतियों में चार्तुमास की परम्परा बड़ी महत्वपूर्ण है। वैदिक परम्परा के संतों में भी चातुमास की परम्परा चली आ रही है परन्तु जैन धर्म में इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

चार्तुमास का अर्थ है- चार मास के लिए साधु-साध्वियों का एक स्थान पर ठहरना। चार्तुमास का आरंभ वर्षाऋतु में होता है। वर्षा के कारण सभी मार्ग अवरुद्ध हो जाते है और जीव जंतुओं की उत्पत्ति भी बढ़ जाती है अतः जीवों की रक्षा और संयम-साधना के लिए चार मास तक साधु-साध्वियों को एक स्थान पर रुकने का शास्त्रीय विधान है।

अपवाद स्वरुप ही साधु चार्तुमास में अन्यत्र जा सकते हैं। शास्त्रों में उल्लेख है कि संघ पर संकट आने अथवा किसी स्थविर या वृद्ध साधु की सेवा के लिए साधु चार्तुमास में दूसरे स्थान पर जा सकता है अन्यथा उसे चार्तुमास में एक स्थान पर रुकने का शास्त्रीय आदेश है।

जैन साधु वर्ष में 8 माह नंगे पांव विहार कर जैन सिद्धांतों, अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का विशेष प्रवचन एवं उपदेश श्रावकों को देते हैं।

जैन धर्म में चार्तुमास की परम्परा अत्यंत प्राचीन है। स्वयं श्रमण भगवान श्रीमहावीर ने अपने जीवन में विभिन्न क्षेत्रों में 42 चार्तुमास किए। उन्होंने अपना अंतिम 42 वां चार्तुमास पावापुरी में किया था। यहां उन्होंने अपना अंतिम उपदेश तथा देशनाएं दी थी जो जैनों के प्रसिद्ध आगम ''उत्तराध्यन सूत्र'' में संकलित हैं। अपने इस अंतिम चार्तुमास में भगवान श्रीमहावीर ने अपने प्रधान शिष्य श्रीगौतम स्वामी को प्रतिबोध देते हुए कहा था- **''समयं गोयम मा पमाए''**

अर्थात् ''हे गौतम ! संयम साधना के लिए एक क्षण भी आलस्य मत करो।''

भगवान श्रीमहावीर का यह संदेश केवल श्रीगौतम स्वामी के लिए ही नहीं अपितु प्रत्येक साधक के लिए था।

जैन धर्म में सामाजिक तथा धार्मिक दृष्टि से यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। व्यक्ति और समाज में परस्पर सम्बद्ध हैं। एक दूसरे का विकास परस्पर सहयोग से होता है। हमारे साधु-साध्वियां वर्षावास में लोगों को समाज में परस्पर भाईचारे, सद्भावना और आत्मीयता बनाए रखने की प्रेरणा देते हैं। आधुनिक युग संदर्भ में व्यक्ति और समाज की परिस्थितियां बदल गई है। जीवन में कुंठाएं, धन लोलुपता और पक्ष राग बढ़ गया है तथा धर्म राग कम हो गया है। फिर भी साधु-साध्वी इसमें संतुलन रखने और मर्यादित जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं जिससे समाज में एकरुपता बनी रहती है। धार्मिक दृष्टि में तप, जप, स्वाध्याय, दान, उपकार और सेवा आदि प्रवृत्तियों को प्रश्रय देना उनका ध्येय भी है और कर्त्तव्य भी, क्योंकि साधु-साध्वियां समाज के अधिक निकट होते हैं और वे समाज में पनप रही रुढ़ियों और मिथ्या धारणाओं का निराकरण करने का प्रयत्न करते हैं। आधुनिक युग संदर्भ में चार्तुमास की यही विशेषता है। चार्तुमास में पर्युषण महापर्व

भी आता है। इस दृष्टि से इसकी महत्ता और भी बढ़ जाती है। यह जैनों का अलौकिक पर्व है। एक ओर जहां तप, त्याग का पर्व है वहां परस्पर वैमनस्य और वैर, विरोध को दूर करने का सशक्त माध्यम भी है।

भगवान श्रीमहावीर ने चार्तुमास में इसकी गवेषणा इसलिए की थी कि व्यक्ति समाज में रहते अनेक प्रकार के मन-मुटावों का शिकार हो सकता है अतः महापर्व में क्षमा धर्म से इनका सुधार कर लिया जाए।

यह धारणा एक स्वस्थ और सभ्य समाज की गारंटी है। इस प्रकार जैन धर्म में चार्तुमास का सामाजिक और धार्मिक महत्व तो है ही व्यक्ति और समाज को एक सूत्र में पिरोने का भागीरथ प्रयत्न भी है।

चार्तुमास किसलिए-

चार्तुमास स्वयं को समझने, श्रावक-श्राविकाओं को धर्म की ओर अग्रसर करना धर्म की महिमा बतलाना, उपदेशों के माध्यम से धर्म की प्रवृत्ति सिखाना, धर्मसंसद में आने से व्यक्ति तनाव से मुक्ति पाने का सूत्र पाता है। उनका कहना है कि साधु के सम्पर्क में आने पर श्रावक को यम, नियम एवं संयम की शिक्षा मिलती है और धीरे-धीरे यह प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। साधु धर्म की मिसाल के रुप में देखा जाता है। चार्तुमास के दौरान मौन, उपवास, तपस्या, आदि कार्यो का बहुत प्रभाव देखा जाता है। चार्तुमास के दौरान ही जैन अनुयायियों के लिए पर्युषण महापर्व आते हैं। यह धर्म आराधना का पर्व होता है। चार्तुमास का समय उपर्युक्त होने के कारण इस दौरान श्रावक-श्राविकाओं को प्यास एवं भूख भी कम लगती है, जिससे श्रावक आसानी से तपस्या कर सकता है।

आठ अभव्य जीव?

1- कालसौकरिक कसाई।
2- कपिला दासी।
3- अंगारमर्दकाचार्य।
4-संगमदेव।
5- पालक पुरोहित।
6- विनयरत्न साधु।
7- वैतरणी वैद्य।
8- कृष्ण पुत्र पालक।

"शिखाध्वज"

राजा ने प्राणों से प्रिय अपने राजकुमार को एक जाने-माने संत को सौंपा। कहा कि हमें पूरा विश्वास है कि आप इसे समस्त विद्याओं में प्रवीण-पारंगत कर सच्चे उत्तराधिकारी के रुप में लौटाएंगें। पांच वर्ष की अवधि तय की गई। इसके बाद राजकुमार को वापस लौटाने का निर्धारण हुआ।

पांच वर्ष बीत गये। एक बार भी राजा को राजकुमार से मिलने की अनुमति नहीं थी। अंततः संत राजकुमार को लेकर राजदरबार में लौटे। राजकुमार के सिर पर गूदड़ों की गठरी लदी थी, कुली जैसी पोशाक थी। राजा यह दृश्य देखकर हैरान रह गया। बोला कि हमने राजकुमार को कुली-कबाड़ी बनने तो आपके पास नहीं भेजा था। इतने में राजा को अभिवादन न करते देख संत ने एक बेंत राजकुमार की पीठ पर जमा दी। राजकुमार की चीख निकल गई। राजा बोले- ''बस महाराजजी हो गई शिक्षा। अब आप इसे हमें सौंप दें।'' मंत्रिगण व उपस्थित सभा-सदस्य बोल उठे-''आपको दिखाई नहीं देता, यही राजकुमार कल राजा बनेगा। चमड़ी उधड़्वा देगा।'' महात्मा तुरन्त बोल उठे- ''आज शाम तक यह राजकुमार नहीं, मेरा शिष्य है। इसकी शिक्षा-दीक्षा शाम को पूरी होगी। फिर यह जो भी करेगा, इसकी शिक्षा-दीक्षा जो मैंने पांच वर्षों में दी है, इस पर निर्भर करेगा।''

आपने राजकुमार के प्रति व्यवहार का स्पष्टीकरण देते हुए संत बोले-काष्ठ-कठिनाईयों, मान-अपमान, भले-बुरे, ऊंच-नीच, कठिन-सरल, अपने पराये का ज्ञान, अनुभव राजकुमार को नहीं हुआ तो फिर वह प्रजा का दुःख कैसे समझेगा ? प्रजावत्सल कैसे बनेगा। न्याय कैसे कर पाएगा ?

यही राजकुमार अपने गुरु के हाथों गढ़कर एक सफल न्यायप्रिय ''शिखध्वज'' नामक राजा के रुप में प्रसिद्ध हुआ।

*** ऊंचाई पर उठना आसान नहीं है, परन्तु उससे भी कठिन है ऊंचाई पर टिके रहना।**

जैन धर्म में चार्तुमास का महत्व

प्रकृति का घटनाक्रम चलता रहता है। यह प्रकृति रानी भी बड़ी चंचल है। इसके परिधान परिवर्तित होते रहते हैं। इसी परिवर्तन के दौर में गर्मी आती है, ठंड आती है और आता है चौमासा। जैन शास्त्र में आषाढ़ी चौमासा का उल्लेख जोर शोर से हुआ है। व्यवहार में भी इसी चौमासे को चौमासे के रुप में ख्याति मिली है। इस चार्तुमास का महत्व लौकिक जगत में है तो आध्यात्मिक जगत में भी है। क्योंकि इसी अवधि में बार-बार बादलों का योग बनता है, पानी की वृद्धि होती है,जो लौकिक समृद्धि का आधार है। लोकोत्तर जगत में इस अवधि में गुरु का योग बनता है, पानी की वृष्टि होती है, जो आध्यात्मिक समृद्धि का आधार है। इस चार्तुमास में लौकिक सृष्टि बदलती है, आध्यात्मिक सृष्टि भी बदलती है। बहुत कुछ बदला नजर आता है। साधुचर्या का एक शब्द है, चार्तुमास। चातुर्मास एक पारिभाषिक शब्द है, जो चार माह की अवधि है, जिसे साधु विधिपूर्वक एक ही स्थान पर बिताते हैं। चार्तुमास शब्द का मूल अर्थ है, ''वर्षा योग''। ग्रामों व नगरों में वर्षा ऋतु में श्रमण, साधु, उपाध्याय व आचार्य एक स्थान पर चार महीने तक व्यतीत करते हैं। अतः इसे चार्तुमास कहते हैं। चार्तुमास आषाढ़शुक्ल चतुर्दशी से प्रारंभ होता है और कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी तक माना जाता है। शुरु हो रहा है जैन साधु-साध्वी का चार्तुमास जिसमें साधु-साध्वी एक ही स्थान पर चार माह रहकर धर्म प्रभावना करेंगें।

चार्तुमास को स्थिर करने को प्रतिष्ठायन कहते हैं। चार्तुमास धार्मिक जगत की धुरी है। वर्षावास या चार्तुमास का न केवल पर्यावरण व कृषि के दृष्टिकोण से वरन् धार्मिक दृष्टिकोण से भी विशेष महत्व है। वर्षाऋतु में जीवोत्पत्ति विशेष रुप से हो जाती है। पानी के सम्पर्क में आकर भूमि में दबे बीज अंकुरित हो जाते हैं। सीलन, फलन, फफूंद, काई की उत्पत्ति हो जाती है। त्रस व स्थावर जीवों की अधिकता के कारण उनकी विराधना की संभावना अधिक हो जाती है। जगह-जगह जल एकत्रित हो जाने से एक गांव से दूसरे गांव या शहर तक पगडण्डी द्वारा विहार संभव नहीं हो पाता है। आगम शास्त्रों में भी स्पष्ट निर्देश है कि चार्तुमास के दौरान साधु-साध्वियों को विहार नहीं करना चाहिये। चार्तुमास का संयोग हमारी मनःस्थिति में भरे विभिन्न प्रदूषणों को समाप्त करने के साथ ही दुष्प्रवृत्तियों को सत्य वृत्तियों में बदलने का कार्य करता है।

चिंतन में सत्प्रवृत्तियों का समावेश हो जाता है तो चरित्र में आदर्शवाद के प्रति अगाध निष्ठा उत्पन्न हो जाती है। गुरु के दिशा-दर्शन के फलस्वरुप सभी लोगों में धर्म का भाव होता है, निष्ठा होती है, श्रद्धा, समर्पण का भाव होता है। हमें हमारी संस्कृति प्रवृत्ति को उसकी उपलब्धियों और संभावनाओं को समझकर उनके गुणों को आत्मसात करना होगा, क्योंकि हमारी परम्परा में ही हमारा जीवन-प्रवाह बना रहता है। मानव शरीर को धर्म का प्रथम साधन माना गया है। शरीर को धर्माचरण में लगाकर जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। शरीर अन्तरात्मा का सुन्दर मंदिर है, जब शरीर के साथ हमारे भाव और विचार अच्छे हो जाएं तो यह जीवन सार्थक बन जाएगा।

धन के वैभव से हम समृद्धि के द्वार तक पहुंच गए, किन्तु मन,वचन,काया से बहुत गरीब हो गये हैं। आधुनिक भौतिक वाद की चकाचौंध के बीच हम अपने वास्तविक अस्तित्व को भूल गए है, जिसने हमारे नैसर्गिक सृजन का पक्षपात कर दिया है। धन के अनुचित संग्रह से आत्मा में मलिनता आती है। **''धन'' समुद्र का ''खारा पानी''** है, जितना हम उसको पीते हैं, उतनी ही प्यास बढ़ती जाती है। धन को धर्म के साथ जोड़कर हम आत्मीय रुप से धनवान बन सकते हैं। **''चार्तुमास'' धन और धर्म दोनों के द्वारा हमें उपलब्धियां प्रदान कर सकता हैं।** धन-समृद्धि के दर्शन तो हम करते हैं किन्तु आत्मा के वैभव के दर्शन कराने में चार्तुमास हमें बहुत बड़ा योगदान प्रदान कर सकता है। चार्तुमास काल में त्याग, वैभव, तप, व्रत और संयम का सागर लहराने लगे। ऐसा सामूहिक प्रयत्न होना चाहिये। हम साधना व आराधना के महत्वपूर्ण बिन्दुओं की उपेक्षा करते हैं। हमारी जीवन शैली अहिंसा से प्रभावित हो। हम जितना अधिक संयम का अभ्यास करेंगे उतना ही अहिंसा का विकास होगा। भगवान महावीर ने चार्तुमासकाल में जिनवाणी द्वारा जीने की कला से विश्व को अवगत कराया है। अगर उसके अनुरुप हम चले तो निश्चित ही यशस्वी मानव बन सकते हैं। जप, तप,

सत्संग आदि में समर्पित भाव से सहभागी बनने से ही चार्तुमास की विशेषता अक्षुण्ण रहेगी।

चार्तुमास में हमारा कर्त्तव्यः- चार्तुमास अवधि के दौरान साधु-साध्वियों को विहार नहीं करना चाहिये। एक ही स्थान पर निवास करने से वहां के संघ के संतों के प्रति व स्वयं के प्रति कुछ कर्त्तव्य होते हैं, जिनका निर्वहन हमें करना होता है। अपने गांव या नगर में चार्तुमास की स्वीकृति की जय बोलने मात्र से कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती।

संतों के चार्तुमास के दौरान सेवा, बीमार, वृद्ध संतों की सेवा करना श्रावक, श्राविकाओं का कर्त्तव्य होता है। संतों के आहार, पानी, स्वास्थ्य, स्वाध्याय व अन्य अनुकूलताओं को ध्यान में रखाते हुए, सेवा करना जरुरी समझें। जरुरी नहीं कि चार्तुमास में मासक्षमण, अट्ठाई, अट्ठ तप या अन्य कोई तप किए जाएं।

18 पाप स्थान

1- प्राणातिपात (जीवों की हिंसा करना)
2- मषावाद (असत्य झूठ बोलना)
3- अदतादान (चोरी बिना दिये लेना)
4- मैथुन (कुशील अब्रहाचार्य)
5- परिग्रह (धनादिक द्रव्य ज्यादा)
6- क्रोध (गुस्सा कोप रोष किया)
7- मान (घमंड अहंकार किया)
8- माया (कपट छल किया)
9- लोभ (तष्णा लालच किया)
10-राग (जीवों का वैभाविक ममत्व)
11-द्वेष (जीवों का वैभाविक वैर)
12- कलह (क्लेश झगड़ा किया)
13- अभ्याख्यान (झूठा कलंक लगाना)
14- पैशून (चुगली और दोष किया)
15-परिपरिवाद (बुराई निंदा किया)
16- रति-अरति (संयम में चित नहीं लगाना)
17-माया-मषावाद (कपट सहित झूठ बोला)
18- मिथ्यादर्शनशल्य (श्रद्धा का विपरीत होना)

चार्तुमास वर्षायोग धर्म विकास की आधारशिला है

संत समुदाय हमारे राष्ट्र की सर्वश्रेष्ठ पूंजी है। सर्वश्रेष्ठ धरोहर है। भारत संतों की जन्मभूमि है। भारतीय इतिहास में जैन श्रमणों का सर्वोपरी स्थान रहा है। वर्षायोग चार्तुमास का प्राचीन नाम है। ''वर्षायोग'' आत्मसाधना हेतु जिसका स्वस्थ सुयोग। वनस्पति कायिक जीवों का विघात न होवें, अहिंसा धर्म की रक्षा हो, सब रहे निरोग!

धन्य है हमारे पूर्वाचार्य जिन्होंने वर्षायोग के विज्ञान को अहिंसामूलक धर्म की चाशनी में लपेटकर सहज ही श्रद्धा से मानव के गले में उतार दिया। शरीर मन और आत्मा तीनों तलों पर विरागी साधु को स्वास्थ्य संरक्षण की आध्यात्मिक औषधि थमा दी।

सांसारिक आपाधापी में फंसे मानव भोग-विलासों, भौतिक साधन सुविधाओं, राजनीति और अर्थतंत्र के कलापूर्ण चातुर्य की वैविध्यताओं से ग्रसित प्रमादों की चादर तानकर साये अविवेकी जन के लिये ये चलते-फिरते तीर्थ कुछ समय के लिये ठहर जाते है। जागो, उठो चलो.... चार्तुमास एक धर्म पुरुषार्थ का समय है। ऐसे मौकों को चूकना नहीं चाहिये कारण चार्तुमास साल में सिर्फ एक बार आता है। चार्तुमास समर्पण-सेवा व संकल्प का त्यौहार है। यह ध्यान-साधन-प्रभावना का पर्व है।

वर्षायोग दो शब्दों से मिलकर बना है, वर्षा और इसका योग। वर्षा का अर्थ है। पानी का बरसना और योग का अर्थ है जोड़ अर्थात् आकाश से वर्षा होती है और वह धरती से जुड़ जाती है और धरती से अंकुरण की उत्पत्ति होती है, इसी प्रकार संत की वाणी रुपी वर्षा श्रावक रुपी भूमि में पहुंच जाती है तो धर्म संस्कारों का अंकुर प्रस्फुटित हो जाता है।

आईये ! गौरवमय जैन इतिहास को जाने...!

1- रावण की 1,25,000 पुत्रियां थी।

2- जैनाचार्य श्री हरिभद्रसूरीजी ने 1444 ग्रंथों की रचना की थी।

3- जैनाचार्यश्री हेमचन्द्राचार्य ने 3 करोड़ 50 लाख श्लोकों की रचना की थी।

4- श्री राणकपुर तीर्थ धन्नापोरवाल ने बनवाया था।

5- श्री वीरप्रभु ने 25 वें भव में 1180645 मासक्षमण किये थे।

6-श्री तारंगा तीर्थ श्री कुमारपाल राजा ने बनवाया था।

7-भोजराजा प्रतिदिन सवा लाख सोनेयां का दान करते थे।

8-विक्रमराजा प्रतिदिन सवा करोड़ सोनेयां का दान करते थे।

9-24 तीर्थंकर के गणधरों की संख्या 1452 है।

10-श्री वीर प्रभु को नयसार के भव में समकित मिला था।

11-श्री वीर प्रभु का अंतिम चार्तुमास पावापुरी में हुआ था।

12-श्री वीरप्रभु ने 11 गणधर थे।

13-20 तीर्थंकर श्री सम्मेद शिखर में मोक्ष गये थे।

14-इस अवसर्पिणी काल में सर्वप्रथम मोक्ष मरुदेवी की माता गये थे।

15-चवदह पूर्व का सार नवकार मंत्र है।

16-संसार दावानलमें कोई भी अक्षर जोड़वाला नहीं है।

17-मौन ग्यारस की आराधना सुव्रत सेठ ने की थी।

18-सम्प्रति राजा ने पूर्व भव में पेट की भूख शांत करने के लिये दीक्षा ली थी।

19-परमात्मा का जन्म कल्याणक मनाने के लिये देव स्नात्र पूजा करते हैं

20-चम्पा श्राविका ने छः मास के उपवास किये थे।

21- सुभद्रा सती के पुण्य प्रभाव से द्वारका नगरी के द्वार खुले थे।

22-श्रीकृष्ण ने 18000 साधुओं को वंदन किया था।

23-परमात्मा समवसरण में बैठकर देशना देते हैं।

24-श्री ऋषभदेव प्रभु ने पारणा इक्षुरस से किया था। बाकी 23 तीर्थंकर ने खीर से किया था।

25- श्री ऋषभदेव प्रभुवीर के आरे में से जब 89 पखवाड़ियां बचे तब मोक्ष में गये बाकी 23 तीर्थंकर चौथे आरे में 89 पखवाड़ियां बाकी रहे तब मोक्ष में गये थे।

26- श्री ऋषभदेव प्रभु के शासन में उत्कृष्ट तप बारह मास दूसरे तीर्थकर श्री अजितनाथ से 23 तीर्थकर श्री पार्श्वनाथ प्रभु तक आठ मास तथा श्री वीरप्रभु के शासन में उत्कृष्ठ तप छः मास है।

27- श्री ऋषभदेव भगवान से लेकर श्री कुंथुनाथ भगवान तक चौवद पूर्व प्रवृत्ति तथा विच्छेद असंख्यकाल तथा श्री अरनाथ भगवान से श्री पार्श्वनाथ प्रभु तक चौवदह पूर्व आरे विच्छेद असंख्यकाल था श्री वीरप्रभु के शासन में चौवदह पूर्व प्रवृत्ति 1000 वर्ष और विच्छेद 20000 वर्ष का है।

28- तीर्थंकर परमात्मा तीसरे और चौथे आरे में ही जन्म लेते है, यह अनादिकाल से नियम है।

29- श्री ऋषभदेव के बाद 50 कोटी सागरोपम बाद श्री अजितनाथ प्रभु हुए थे। श्री सौधर्म इन्द्र की आयु उत्कृष्टमें दो सागरोपम होती है इतने समय में 25 लाख कोटी इन्द्र हो जाते है।

30- श्री शांतिनाथ भगवान की माता ने चवदह स्वप्न दो बार देखे यह स्वप्न तीर्थंकर और चक्रवर्ती बनने के सूचक थे।

31- श्री तीर्थंकर परमात्मा प्रथम प्रहर में देशना देते है इसके बाद दूसरे प्रहर में गणधर महाराज देशना देते है और चौथे प्रहर में फिर से तीर्थंकर परमात्मा देशना देते हैं।

32- 23 तीर्थंकर परमात्मा को दिन के पूर्व भाग के प्रथम प्रहर में केवलज्ञान हुआ तथा श्री महावीर प्रभु को दिन के पश्चिम भाग में अंतिम प्रहर में केवलज्ञान हुआ।

33- चौवदह पूर्वी महात्मा उत्कृष्ट में सर्वाथसिद्ध अथवा मोक्ष में जाते हैं।

34- श्री अजीतशांति स्त्रोत की रचना श्री नमिनाथ भगवान के गणधर श्री नंदिषेण मुनि जब शत्रुंजय तीर्थ आये तब हुई थी।

तो जीवन निष्फल है

धृतो योगो न ममता हता न समताऽऽदृता ।
न च जिज्ञासितं तत्त्वंगतं जन्म निरर्थकम् ।।

- अध्यात्म सार

अर्थात्- वाकई में जिसने योगों को धारण नहीं किया, ममता का नाश नहीं किया, समता का सेवन नहीं किया और तत्त्वंकी जिज्ञासा नहीं जगाई उसका जीवन व्यर्थ है।

आईये अभक्ष्य सामग्री को पहचान कर त्याग करें...!

✻ दही :- दो रात बीतने पर दही में दो इन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति होने से अभक्ष्य।

✻ मक्खन :- छाछ से अलग होते ही तुरन्त दो इन्द्रिय चलते-फिरते असंख्य जीवों की उत्पत्ति होने से अभक्ष्य।

✻ बरफः- पानी जमने पर असंख्य एक इन्द्रिय जीवों की मृत्यु, फिर दो इन्द्रिय चलते-फिरते असंख्य जीवों की उत्पत्ति।

✻ आलू, प्याज (कंदमूल):- सुई के नोक जितने ही भाग में अनंत जीवों की उपस्थिति।

✻ द्विदल (कच्चे दूध-दही के साथ दाल या दाल के अनाज का मिश्रण):- तुरन्त दो इन्द्रिय चलते-फिरते असंख्य जीवों की उत्पत्ति।

✻ Ice cream में:- E-471 (मांसाहारी तत्व) की उपस्थिति।

✻ चीझः- बछड़ेकी आंत से बना ''रैनेट''और सुअर के पेट से बना ''पेप्सीन'' से दूध जमाकर चीझ बनता है।

✻ जेली, जेम्स, आईसक्रीम पावडर, केप्सूल के कवर, सोफ्ट सुगर केण्डी आदि में ''जिलेटीन'' जानवरों की हड्डीयों और चमड़ी को उबाकर बनता है।

✻ केडबरी आदि चॉकलेटः- एक ही चॉकलेट में 600-1380 mg nicket अधिकतम सुरक्षा सीमा मात्र 4 mg Nicket है।

✻ पोलो, मिन्टोफ्रेश आदि में :- गाय की हड्डियों का पावडर होता है।

✻ नुडल्स, सूप पावडर, सूप ब्युब्सः- चिकन फ्लेवर मिला होता है।

✻ पिझाः- बीफ टलो (गाय की चर्बी) और जिलेटीन होता है।

✻ वेफर्स, कुरकुरेः- आदि पशु चर्बी में तले होते हैं।

✻ ब्रेड,पॉव, बिस्किट ''मैदा'':- 15-20 दिन तक पानी में सड़ाएं गेहूं को ईयल के संग ही पीस कर बनाया जाता है।

✻ नींबू का सत/फलः- शक्कर बनाते वक्त वेस्टेज में कीड़ों से सड़ाकर, कीड़े के खट्टे मल को सुखाकर बनता है।

✻ डायाबीटीज के इन्सुलिनः- मात्र 1 पौण्ड इन्सुलिन के लिए 10,000 सुअरों का वध करना पड़ता है।

✻ अजीनोमोटोः- मछली से बनता है।

✻ कस्टर्ड पॉवडरः-अंडे का रस सुखाकर बनता है।

✻ चाइनाग्रासः- समुद्री शैवाल और काई (लील) को सुखाकर बनता है।

✻ पनीर और क्रीमः- एक रात्री बीतने पर अभक्ष्य, बासी हो जाता है और बासी खाद्य पदार्थों में जीव पैदा होते हैं।

✻ नानः- वेजेटरियन होटल्स वाले बाहर से अण्डे का रस मिला, गुंथा हुआ तैयार आटा मंगवाते है।

✻ Coldrinks :- 30 से 70 गुना अत्यंत हानिकारक कीटनाशक और कैमिकल्स होते हैं।

पाप का बाप-लोभ

आकारः सर्वदोषाणां गुणग्रसनराक्षसः ।
कन्दो व्यसनवल्लीनां लोभः सर्वार्थबाधकः ॥
- योगशास्त्र ग्रंथ

अर्थात्- सभी दोषों की खान, गुणों को निगल जानेवाला राक्षस और दुःख की लता का कंद ऐसा लोभ सभी कार्यो-प्रयोजनों का बाधक है।

चार्तुमास के चार चरण

1- दर्शनाराधना। 2- ज्ञानाराधना 3- चारित्राराधना। 4- तपाराधना।

इन चारों का अनुकरण करते हुए चार्तुमास आराधना में संलग्न चतुर्विध संघ की साधना में सहायक बनना चाहिये।

चार्तुमास के चार महीने -

1- आषाढ़ का महीना कहता है-
आलस्य छोड़ो।

2- श्रावण का महीना कहता है-
श्रावण की कला सीखो।

3- भाद्र महीना कहता है-
भद्र परिणामी बनो वर्ना क्वार के महीने में कोरे रह जाओंगे।

मंदिरजी में हो रही अशातना को रोकिये....

1- सूर्यास्त के पूर्व जिन मंदिर खोलना।
2- सूर्योदय से पूर्व पक्षाल।
3- जर्मन सिल्वर की थाली, कलश आदि बर्तनों का उपयोग।
4- प्लास्टिक, स्टील, एल्युमीनियम की बाल्टियों या बर्तनों का उपयोग।
5- मूलगभारे में स्त्री पुरुष का स्पर्श।
6- युवतियों का पुरुषों की उपस्थिति में नाचना।
7- केसर का अति उपयोग।
8- निर्विवेकतापूर्वक वरख का उपयोग।
9- बिजली का उपयोग।
10-घी के दीपक खुले रखना
11-पसीने की बूंदें प्रभु पर रखना।
12-पुजारी के मलिन वस्त्र।
13-अंगलूछने में कृपणता।
14-मूलगभारे के निर्माण में लोहे का उपयोग।
15-पुरुषों का सीले हुए कपड़ों का उपयोग।
16-प्रभु पर न चढ़ाए जाने वाले पुष्प चढ़ाना।
17-प्रभु की नौ से अधिक अंगों की पूजा।
18-धूफ (धूप) की जगह अगरबत्ती का उपयोग।
19-गूरु मूर्ति की अविवेकपूर्वक पूजादि।
20-पर-द्रव्य से पूजा।
21-भौतिक सुखार्थ देव-गुरु की भक्ति।
22-इलेक्ट्रिक वाद्यों का उपयोग।
23-अन्यायोपार्जित धन का उपयोग।
24-चढ़ावे की रकम शीघ्र न देना।
25-शक्ति से अधिक चढ़ावा बोलना।
26-बैंकों में देव-द्रव्यादि रखना।
27-जिनालय के भंडार में से पूजारी को वेतन।
28-पारदर्शक वस्त्र पहनकर बहनों का मंदिर में आना।
29-जीर्णोद्धार के प्रति दुर्लक्ष्य।
30-थैली के दूध से पक्षाल।
31-पक्षाल के समय वालाकुंची का दुरुपयोग।
32-पर्यटक के रुप में तीर्थयात्रा करनी।
33-पुजारी के वेतन में कृपणता।
34-भाड़ेके संगीतकारों द्वारा जिन भक्ति करवाना।
35- रंगोली में भगवान के चित्र बनाना।
36-अशुद्ध और हल्के कोटि की वस्तुओं से आंगी रचना।
37- महोत्सवों में रात्रि भोजन।
38-महोत्सवों में बर्फ, आचार इत्यादि अभक्ष्य पदार्थ का उपयोग।
39-दीपक को प्रतिमा के एकदम निकट रखना।
40-नकद-रुपये-पैसों का प्रतिमाजी से स्पर्श करवाना।
41-बिना विशेष कारण और अशास्त्रीय विधि से प्रतिमाओं पर पेंट करवाना।
42-एसिड इत्यादि रासायनिक पदार्थों द्वारा प्रतिमाएं साफ करना।
43-जिनालय में फिनायल का पोछा लगाना।
44-जिनालय में प्रभु के समक्ष श्रावक-श्राविकाओं का बहुमान करना।
45-जिनालय में निक्कर/बरमूड़ा/केपरी आदि पहन के जाना।
46- बहनों द्वारा मासिक धर्म का उचित पालन न करना।
47-जिनालय के शिखर पर स्थायी मंच (कटघारा) बनवाना।
48-प्रभावना में बिस्कुट जैसे बाजारु अभक्ष्य पदार्थ बांटना।
49-प्रतिमाओं पर स्थायी रुप से आभूषण चिपकाना।
50-मंदिरजी की वर्षगांठ देसी तिथि के हिसाब से न मनाकर अंग्रेजी तारीख से मनाना।

- आशातनाओं से बचकर अपना जीवन सफल बनाएं।

जिसे पढ़ने से, समझाने से और विचारने से आत्मा विभाव से, विभाव के कार्यो से और विभाव के परिणामों से उदासीन न हुआ, विभाव का त्यागी न हुआ, विभाव के कार्यो का और विभाव के फल का त्यागी न हुआ, वह पढ़ना , वह समझाना और वह विचारना अज्ञान है। विचार वृत्ति के साथ त्याग वृत्ति उत्पन्न करना यही विचार सफल है-यह कहने का ही ज्ञानी का परमार्थ है।

क्यों मनाया जाता है चार्तुमास पर्व ?

जैन धर्म पूर्णतः अहिंसा पर आधारित है। जैन धर्म में जीवों के पूर्ण अहिंसा पर जोर दिया जाता है। जैन धर्म के अनुसार वर्षाऋतु में अनेक प्रकार की कीड़े एवं सूक्ष्म जीव जो आंखों से दिखाई नहीं देते हैं, वे सर्वाधिक सक्रिय जो जाते हैं। ऐसे में मनुष्य के अधिक चलने फिरने के कारण इन जीवों को नुकसान पहुंच सकता है। अतः इन जीवों को परेशानी ना हो और जैन साधुओं द्वारा हिंसा ना हो इसलिये चार्तुमास में जैन साधु साध्वी चार महीने एक ही स्थान पर रहकर धर्म आराधना, संयम साधना एवं जन जन के आत्म कल्याण हेतु प्रेरणा एवं प्रवचन देते हैं। इस दौरान जैन साधु तप एवं जिनवाणी के प्रचार-प्रसार को विशेष महत्व देते हैं।

चार्तुमास पर्व का महत्वः-

जैन धर्म के अनुयायी वर्ष भर पैदल चलकर भक्तों के बीच अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य का विशेष ज्ञान बांटते है। चार्तुमास में ही जैन धर्म का सबसे प्रमुख संवत्सरी महापर्व 8 दिवसीय पर्युषण पर्व आराधना के साथ मनाया जाता है। जो जैन अनुयायी वर्ष भर में जैन धर्म की विशेष मान्यताओं का पालन नहीं कर पाते वह इन 8 दिनों के पर्युषण पर्व में रात्रि भोजन का त्याग, ब्रह्मचर्य, स्वाध्याय, जप, तप, मांगलिक प्रवचनों का लाभ तथा साधु-संतों की सेवा में संलिप्त रहकर जीवन सफल करने की मंगल कामना कर सकते हैं। साथ ही चार महीने तक एक ही स्थान पर रहकर धर्म-ध्यान-साधना करने, प्रवचन देने आदि से कई युवाओं का मार्गदर्शन होता है। चार्तुमास स्वयं को समझने और अन्य प्राणियों को अभयदान देने का अवसर माना जाता है।

चार्तुमास एक मासखामण जरूर करें

चार्तुमास काल में हम अगर लम्बी तपस्या नहीं कर सकते है, तो हम निम्न 32 प्रकार के मासखमण में से कोई एक मासखमण कर सकते हैं। मासखमण का अर्थ, ग्रहण किये गये प्रत्याख्यान को लगातार एक मास (30 दिन) तक करना है। 1- नौकारसी, 2- पौडसी, 3- बियासना, 4- एकासना, 5- उपवास, 6- रात्रि संवर, 7- सचित हरि का त्याग, 8- स्नान का त्याग, 9-चरम प्रत्याख्यान, 10- ग्यारह द्रव्य उपरांत त्याग, 11-एक घंटा मौन, 12- सम्पूर्ण सचित का त्याग, 13-टीवी का त्याग, 14- सम्पूर्ण जमीकंद का त्याग, 15-मुखवास का त्याग, 16- मौन सहित भोजन करना, 17- सम्पूर्ण हरी का त्याग, 18- सचित पानी का त्याग, 19-ब्रह्मचर्य का पालन करना, 20- सविधि चारों सतियों को तीन-तीन बार वंदना करना, 21- प्रतिदिन 5 सामायिक करना, 22-चौदह नियम का चिंतन करना, 23- बनी हुई वस्तु फिर गरम नहीं करवाना, 24- चौदह नियम का चिंतन करना, 25- मंदिरजी में आते-जाते समय जुते चप्पल नहीं पहनना, 26-पंचांग नमकर माता-पिता और घर के सब बड़े बुजुर्गो को चरण-स्पर्श करना, 27- स्वयं के लिए नये कपड़े नहीं खरीदना, 28- अपने हाथ से पंखा, कूलर, एसी टीवी आदि चालू नहीं करना, 29- तिविहार-चौविहार करना, 30- बाजार की मिठाई का त्याग, 31- बाजार की नमकीन का त्याग, 32- क्रोध और कषाय नहीं करना यदि आ जाय तो क्षमायाचना करना और सविधि 11 वंदना करना। इन में से कम से कम एक मासखमण जरुर करें।

मोम को पिघलने में आखिर वक्त ही कितना लगता है।

✻ जैसे जान बचाने के लिए रक्तदान सबसे कीमती है वैसे ही आने वाले समय में रिश्तों को बचाने के लिये वक्तदान सबसे कीमती दान है।

✻ व्यवहार और व्यापार में जान से ज्यादा जुबान की कीमत होती है।

✻ खोखला करते रहे लगातार दीमक उसे और लकड़ी इसी भ्रम में रही की लगाव ज्यादा है।

✻ इंसान को पहचानना है तो इंसान से Digitally नहीं Physixally जुड़िए।

✻ ऐसा शौक मत पालिये जो आपके पूरे परिवार को शोक में डाल दें।

✻ घर में पति के विचारों को उतनी ही जगह मिलती है जितना थाली में आचार को।

✻ मम्मी नाराज हो गई तो क्या हुआ ''सॉरी''कहिए मान जाएगी मौम को पिघलने में आखिर वक्त ही कितना लगता है।

जैन परम्परा में चातुर्मास एक विश्लेषण

चातुर्मास का महत्वः- जैन श्रमण परम्परा में चातुर्मास का अन्यन्त महत्व है। यह आध्यात्मिक जागृति का महापर्व है, जिसमें स्व परहित साधन का अच्छा अवसर प्राप्त होता है। यही कारण है कि वर्षावा को मुनिचर्या का अनिवार्य अंग और महत्वपूर्ण योग माना गया है। इसलिये इसे वर्षायोग अथवा चार्तुमास भी कहा जाता है । भगवती आराधना में लिखा है कि **वर्षाकालस्य चतुर्षुमासेषु एक त्रैवावस्थान** भ्रमण त्याग अर्थात वर्षाकाल के चार महीनों में साधुओं को भ्रमण का त्याग करके एक स्थान पर रहने का विधान किया गया है। इसे श्रमण के दस स्थितिकल्पों में अंतिम पर्युषणा कल्प के नाम से अभिहित किया गया है । वृहतकल्प भाष्य में इसे **''संवत्सर''** कहा गया है। वर्षाकाल में आकाश मण्डल में घटायें छाई रहती है तथा प्रायः वर्षा भी निरंतर होती रहती है। इससे यत्र-तंत्र भ्रमण तथा विहार के मार्ग रुक जाते है, नदी नाले उमड़ जाते है। वनस्पतिकाय आदि हरितकाय मार्ग और मैदानों में फैल जाते है। सूक्ष्म-स्थूल जीव-जन्तु उत्पन्न हो जाते है। अतः किसी भी परजीव की विराधना तथा आत्म विराधना से बचने के लिये श्रमण धर्म में वर्षाकाल में एकत्र-वास का विधान किया गया है। यही समय एक स्थान पर स्थिर रहने का सबसे उत्कृष्ट समय होता है। श्रमण और श्रावक दोनों के लिये इस चार्तुमास का धार्मिक तथा आध्यात्मिक विकास की दृष्टिसे महत्व है। इसीलिये श्रमण या उनके संघ के श्रावक चार्तुमास या वर्षायोग को सर्वप्रकारेण प्रिय और हितकारी अनुभव करते हैं।

चार्तुमास की परिभाषाः- वर्ष के बारह महिनों को छह ऋतुओं में विभाजित किया गया है। यथा- 1- बसंत ऋतु (चैत्र बैशाख), 2- ग्रीष्म ऋतु (ज्येष्ठ-आषाढ़), 3- वर्षा ऋतु (श्रावण भाद्रपद) 4- शरद ऋतु (आश्विन-कार्तिक), 5- हेमन्त ऋतु (मार्ग शीर्ष-पौष), 6- शिविर ऋतु (फाल्गुन माह) तथा वर्ष को मौसम की दृष्टिसे प्रमुख तीन भागों में विभाजित किया गया है। यथा- 1- ग्रीष्म (चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़), 2- वर्ष (श्रावक, भाद्रपद, आश्विन तथा कार्तिक), 3- शीत (मार्गशीर्ष, पौष, माघ तथा फाल्गुन)। यद्यपि ये तीनों ही विभाजन चार-चार माह के है किन्तु वर्षाकाल के चार महीनों का एकत्र नाम चार्तुमास या वर्षावास आदि रुप में प्रसिद्ध है।

चार्तुमास का औचित्यः- आचरांग में कहा है कि वर्षाकाल आ जाने पर बहुत से प्राणी उत्पन्न होते है, बहुत से बीज अंकुरित हो जाते है, मार्गो में बहुत से बीज उत्पन्न हो जाते हैं, बहुत हरियाली उत्पन्न हो जाती है। ओस और पानी बहुत स्थानों में भर जाता है। पांच प्रकार की काई आदि स्थान-स्थान पर व्याप्त हो जाती है। बहुत से स्थानों पर कीचड़या पानी से मिट्टी गिली हो जाती है, मार्ग पर चला नहीं जा सकता। मार्ग सूझता नहीं है। अतः इन परिस्थितियों को देखकर मुनि को वर्षाकाल में एक ग्राम से दूसरे ग्राम विहार नहीं करना चाहिये । अपराजित सूरि ने कहा है कि वर्षाकाल में स्थावर और जंगल सभी प्रकार के जीवों से यह पृथ्वी व्याप्त रहती है। उस भ्रमण करने पर महान असंयम होता है। वर्षा और शीत वायु (झंझावाल) से जीवों की विराधना होती है। वायों आदि जलाशयों में गिरने का भय रहता है। वृहतकल्प भाष्य के अनुसार श्रमण को प्रत्येक कार्य करते समय अहिंसा और विवेक दृष्टि रखना अनिवार्य है। वर्षाकाल के चार माह तक एक स्थान पर स्थिर रह कर वर्षायोग धारण करने का विधान है। जैन परम्परा के साथ ही प्रायः सभी भारतीय परम्पराओं, धार्मो में साधुओं को वर्षाकाल के चार माह में एक स्थान पर स्थित रहकर धर्म साधन करने का विधान है।

वर्षावास योग्य स्थानः- श्रमण को वर्षायोग के धारण का उपयुक्त समय जानकर और चर्या आदि के अनुकूल योग्य प्रासुक स्थान पर चार्तुमास व्यतीत करना चाहिये। आचारांग सूत्र में वर्षावास योग स्थान के विषय में कहा है कि वर्षावास करने वाले साधु या साध्वी को उस ग्राम, नगर, आश्रम, सन्निवेश या राजधानी की स्थिति भलीभांति जान लेनी चाहिये। कल्पसूत्र-कल्पलता के अनुसार वर्षावास के योग्य स्थान में निम्नलिखित गुण होना चाहिये-जहां विशेष

कीचड़ न हो, जीवों की अधिक उत्पत्ति न हो, शौच स्थल निर्दोष हो, रहने का स्थान शांतिप्रद एवं स्वाध्याय योग्य हो, गोरस की अधिकता हो, जनसमूह भद्र हो, राजा धार्मिक वृत्ति का हो, भिक्षा सुलभ हो, श्रमण का अपमान न होता हो आदि।

वर्षावास में भी विहार करने के कारण :- वर्षावास धारण कर लेने पर भी यदि दुर्भिक्ष पड़ जाये, महामारी फैल जाये, गांव अथवा प्रदेश में किसी कारण से उथल-पुथल हो जाये, गच्छ का विनाश होने के निमित्त मिल जाये तो देशान्तर में जा सकते है, क्योंकि ऐसी स्थिति में वहां ठहरने से उत्नत्रय की विराधना होगी। आषाढ़ की पूर्णमासी बीतने पर प्रतिपदा आदि के दिन देशान्तर गमन कर सकते हैं। स्थानांग सूत्र में इसके पांच कारण बताये हैं। 1- ज्ञान के लिये। 2- दर्शन के लिये। 3- चरित्र के लिये। 4- आचार्य या उपाध्याय की मृत्यु के अवसर पर तथा 5- वर्षा क्षेत्र के बाहर रहते हुए आचार्य अथवा उपाध्याय की वैय्यावृत्ति करने के लिये और भी कहा है कि निर्गन्थि और निग्रन्थियों को चार्तुमास के पूर्वकाल में ग्रामानुसार विहार नहीं करना चाहिये। किन्तु इन पांच कारणों से विहार किया जा सकता है- 1- शरीर उपकरण आदि के अपहरण का भय होने पर, 2- दुर्भिक्ष होने पर, 3- किसी के द्वारा व्यथित किये जाने पर अथवा ग्राम से निकाल दिये जाने पर 4- बाढ़ आ जाने पर तथा 5- अनार्यो द्वारा उपद्रव किये जाने पर। इस प्रकार वर्षावास के विषय में जैन आचार शास्त्रों में यह विवेचन प्राप्त होता है। श्रमण के वर्षावास का समय कषाय रुपी अग्नि को एवं मिथ्यात्व रुपी ताप को त्याग एवं वैराग्य की शीतल धारा से तथा स्वाध्याय और ध्यान की जलवृष्टि से उसी प्रकार शांत करने का है, जिस प्रकार जल की शीतल धारा बरस कर धरती की तपन शांत करती है। समाज व साधु का सिंधु व बिन्दु जैसा सम्बन्ध है। साधु व समाज का कैसा संबंध होता है- आहार ग्रहण करते समय साधु हाथ नीचे होता है, दाता का ऊपर का आहार ग्रहण के बाद दाताया ग्रहस्थी को हाथ नीचे व साधु का आर्शीवाद के रुप में ऊपर रहता है। कभी दाता का हाथ ऊपर तो कभी साधु का हाथ ऊपर, जब तक ऊपर, जब तक इसका संबंध है, तब तक समाज बंधा हुआ है, दोनों का एक दूसरे पर अनुशासन है। जब इसका संबंध टूट जायेगा। आदर्श का अर्थ है दर्पण, जब दर्पण स्वच्छ होता है तो चेहरा साफ दिखाई देगा। साधु संस्था पवित्र होगी तो समाज आदर्श बनेगा, समाज व धर्म को बनाने हेतु गृहस्थ चिन्तन करें ताकि हम एक आदर्श समाज का निर्माण करने में सफल हो।

दुर्लभ समकितरत्न

लब्भइ सुर-सामित्तं लब्भइ पहुअत्तणं न संदेहो।
एगं नवरि न लब्भइ दुल्लह-रयणं व सम्मत्तं ॥

अर्थात्- *इन्द्र का पद या ऐश्वर्य सहजरुप से मिल जाए, इसमें कोई संदेह नहीं है। सच में जो प्राप्त करना दुर्लभ है वह समकित नाम का रत्न है।*

असावधानी

कहते हैं कि कलिंग देश का राजा मधुपर्क खा रहा था। उसके प्याले में से थोड़ा सा शहद टपककर जमीन पर गिर पड़ा। उस शहद को चाटने मक्खियां आ गई। मक्खियों को इकट्ठी देख छिपकली ललचाई और उन्हें खाने के लिए आ पहुंची। छिपकली को मारने बिल्ली पहुंची, बिल्ली पर दो-तीन कुत्ते टूटे। बिल्ली भाग गई और कुत्ते आपस में लड़कर घायल हो गये।

कुत्तों के मालिक अपने-अपने कुत्तों के पक्ष का समर्थन करने लगे और दूसरे का दोष बताने लगे। उस पर लड़ाई ठन गई। लड़ाई में दोनों ओर की भीड़ बढ़ी और आखिर सारे शहर में बलवा हो गया। दंगाईयों को मौका मिला, उन्होंने सरकारी खजाना लूटा और राजमहल में आग लगा दी।

राजा ने इतने बड़े उपद्रव का कारण पूछा तो मंत्री ने जांचकर बताया- ''राजन्! आपके द्वारा असावधानी में गिराया हुआ थोड़ा सा शहद ही इतने बड़े दंगे का कारण बन गया है।''

तब राजा ने समझा कि थोड़ी सी असावधानी भी मनुष्य के लिये कितना बड़ा संकट उत्पन्न कर सकती है।

संत शब्द सुधा सागर....

अनंत अनंत उपकारी सर्वज्ञ सर्वदर्शी तीर्थंकर प्रभु ने संसारी प्राणियों के उद्धार, उत्थान और कल्याण के लिए यह दुर्लभ जिनवाणी फरमायी। जो भव्य प्राणी जिनवचनों पर श्रद्धा, प्रतीति और रुचिकर तदनुसार आचरण करते है वे मोक्ष के अव्याबाध सुखों को प्राप्त करते हैं। प्रभु फरमाते है कि अज्ञान अंधकार को दूर करने के लिए आत्मा में ज्ञान का दीपक प्रकट करो। यदि किसी घर में प्रकाश हो, दीपक जल रहा हो तो चोर उस घर में प्रवेश करते हुए विचार करेंगे उसी प्रकार हमारे आत्मा रुपी घर में यदि ज्ञान का प्रकाश होगा, ज्ञान रुपी दीपक जल रहा होगा तो कर्म रुपी चोर प्रवेश करते हुए विचार करेंगे ? कौन सा ज्ञान रुपी दीपक हमें सदैव अपने साथ रखना है ? प्रभु फरमाते है- ''मेरे किये हुए कर्मो को मैं भोग रहा हूं, दूसरा कोई मुझे दुःख देनेवाला नहीं इसी ज्ञान रुपी दीपक को हर समय पग-पग पर हमें साथ रखना है ताकि नये कर्मो का बंध नहीं हो और पुराने बांधे कर्मो को शांति से सहन किया जा सके।

प्रत्येक जैनी के मन में सदैव यह विचार रहना चाहिये कि कर्म कोई दूसरा करें और भोगे कोई दूसरा, ऐसा कभी होता नहीं। यदि ऐसा होता तो कोई भी जीव दुःखी नहीं होता, नरक तिर्यंच गति में कोई भी जीव नहीं जाता। दुनिया में आप स्पष्ट देखते हो कि जो अपराध करता है, उसे सजा भुगतनी पड़ती है। किसी मनुष्य ने चोरी की और वह पकड़ा गया। उसे सजा भुगतने के लिये जेल भेज दिया गया। सजा तो चोरी करने वाला ही भोगता है परन्तु उसके माता-पिता, पत्नी सभी को दुःख होता है। परन्तु जो जेल में है उसके दो वर्ष के पुत्र को दुःख नहीं होता क्योंकि लड़का छोटा है। उसे ज्ञान नहीं, समझ नहीं किन्तु माँ बाप को लगता है कि मेरा पुत्र है। पत्नी को लगता है कि मेरा पति जेल में है। यह संबंध सामने रहा तो दुःख हुआ, यदि संबंध नहीं तो दुःख नहीं। आपने अपनी कोई बहुमूल्य वस्तु मित्र को भेंट दे दी, अब मित्र के द्वारा वह वस्तु खो जावे- गुम हो जावे तो दुःख किसे हो ? उसकी खोज कौन करें ? जिसने उसे अपनी माना उसे ही दुःख होगा और वो ही उसकी खोज करेगा। दूसरे को दुःख नहीं होगा वह उसकी खोज भी नहीं करेगा। इसी प्रकार ज्ञानीजन फरमाते है कि आत्मा में अज्ञान का अंधकार मत रखो। ज्ञानरुपी दीपक 24 घंटे जलता रखो। जो कर्म मैं भोग रहा हूं। वे मेरे ही द्वारा किये हुए है, ऐसी धारणा बनी रहे तो आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान का प्रसंग ही नहीं बने। ऐसा समझ रुपी दीपक जलता रहे तो आर्त्तध्यान रौद्रध्यान रुपी चोर अंदर प्रवेश ही नहीं कर सकते। यदि ज्ञान का प्रकाश नहीं रहा तो आर्त्तध्यान रौद्रध्यान से बंधने वाले कर्म रुपी चोर आत्मघर में प्रवेश कर ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप आदि गुण रुपी माल लूट लेंगे। इन कर्मरुपी चोरों से बचना हो तो जिनेश्वर भगवंत के वचनों में शंका-कांक्षा आदि जो दोष लगा रहे हो उन दोषों से बचों, उन दोषों को दूर करो।

जिन भाग्यशाली आत्माओं को जिनशासन मिला है जिनेश्वर भगवान के वचनों में जिसे यथार्थ श्रद्धा है और तद्नुसार आचरण करते है वे दोष नहीं लगाते किन्तु जो जिनशासन का महत्व समझते ही नहीं उन्हें सावधान होने की जरुरत है। बहुत से लोग छोटी-छोटी बातों में तो सावधान रहते है पर बड़ी बातों में लापरवाह बन जाते हैं, माल के ढेर पड़े है अतः ग्राहक कोई वस्तु उठा न ले उसकी पूरी सावचेती रखते है परन्तु उसी दुकान में कोई मुनीम और नौकर भी काम करते हैं उसकी निगरानी नहीं रखी तों ? ग्राहक यदि कुछ ले भी गया तो ज्यादा नुकसान नहीं होगा किन्तु किसी मुनिम या नौकर की नियत बिगड़गई तो बड़ा घोटाला भी हो सकता है ? अतः ग्राहक की अपेक्षा मुनीम और नौकरों के प्रति विशेष सावधानी रखी जाती है। उसी प्रकार जिनशासन को प्राप्त कर सत्यमार्ग को स्वीकार नहीं किया और असत्य में ही रहे तो ग्राहक को धोखा देकर भले ही लूट लेंगे पर घर के मुनीम और नौकर खा जाएंगे, नुकसान कर देंगे, ऐसी स्थिति आपकी नहीं बने, इसकी सदैव सावधानी जरुरी है।

जिसे जिनेश्वर भगवंतों के वचन पर अखूट श्रद्धा है उसे चाहे जैसे दुःख आ जाये तो भी वह जीव परभाव में नहीं जीता है। अर्हन्नक श्रावक की समुद्र में देव ने परीक्षा ली किन्तु वे तनिक भी विचलित नहीं हुए। देव ने पूरे जहाज को आकाश में उछाल दिया किन्तु एक ही श्रद्धा कि मेरा आयुष्य शेष होगा तो यह देव चाहे जितना प्रयास कर ले मेरा बाल भी बांका होने वाला नहीं है और यदि मेरा आयुष्य पूर्ण होने वाला होगा तो हो जायेगा पर मेरा धर्म खोटा-झूठा है, यह मैं नहीं कह सकता।

यह शुद्ध, श्रद्धा का प्रभाव था। एक बार यदि जीव सम्यक्त्व प्राप्त कर ले तो वह नरक गति का आयुष्य नहीं बंधता है। हाँ, एक बात है सम्यक्त्व प्राप्ति के पहले यदि नरक आयुष्य का बंध हो गया हो तो नरक में जाना पड़ता है। बाकी समकिती जीव नरक, तिर्यंच, भवनपति, वाणव्यंतर ज्योतिषी, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद इन सात बोलों का आयुष्य नहीं बांधता है। वह मर कर वैमानिक देवलोक में ही जाता है और अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल में तो मोक्ष में चला जाता है। समयक्त्व की महिमा तो देखो-एक बार समयक्त्व प्राप्त हो जाय तो मोक्ष निश्चित हो जाता है।

क्या आपकी संपत्ति में इतनी ताकत है कि करोड़ें, अरबों रुपये कमाने के बाद अधोगति में नहीं जाओ-दुर्गति के ताले लग जाये ? करोड़पति बनने के बाद आपको कैंसर, टीबी या डाइबिटिज न हो ? संपत्ति में इतनी भी नहीं। फिर आप क्यों उसके पीछे भाग कर अनर्थ कर रहे हो। जहां आपकी वाहवाही होती हो, नाम छपता हो वहां तो आप इस धन को खुशी-खुशी देते हो किन्तु धर्म का कार्य हो-परमार्थ का कार्य हो, जहां नाम नहीं होता हो तो वहां धन खर्च करने में आपका माथा ठनकता है, हाथ पीछे हट जाता है। अपनी प्रशंसा वाहवाही प्रतिष्ठा और नाम के लिये आप भले ही धन खर्च करें उससे कोई लाभ होने वाला नहीं है। इससे विपरीत धर्म बुद्धि से, परिग्रह की ममता हटाकर थोड़ा दान करोंगे तो महान लाभ होगा।

सम्यक्त्वी जीव पुण्य से प्राप्त लक्ष्मी और लक्ष्मी से मिलने वाले सुख में आसक्त नहीं होता परन्तु उन सभी से अलिप्त रहता है। कदाचित पाप के उदय से लक्ष्मी प्राप्त नहीं भी तो दुःख नहीं करता परन्तु दुःख में भी सुख ही ढूंढता है। सुख में सुख तो सभी ढूंढते है पर जो दुःख में सुख ढूंढता है वही सच्चा मानव है। ऐसी पवित्र आत्मा को कोई गाली भी दे तो वह गाली में भी गुण ग्रहण करता है, कोई उपालंभ भी दे तो उसे अच्छा लगता है वह बुराई में अच्छाई ग्रहण करता है। इसी प्रकार जिसकी दृष्टि बदल जाती है उसके अध्यवसाय भी निर्मल हो जाते है।

ऐसा जान कर जो भव्य प्राणी आत्मा में ज्ञान का दीप प्रकट करें, अपनी श्रद्धा को मजबूत बनाएंगे, गुणग्राहक दृष्टि रखेंगे वे इस लोक में भी सुखी होंगे और परलोक में भी सुखी होंगे।

शासन -समाचार

आचार्यश्री का चार्तुमास रतलाम में

रतलाम- वर्धमान तपोनिष्ट आचार्य देवेश श्री नयचंद्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा सहस्त्रावधानी गणिवर्य श्री अजीतचंद्रसागरजी म.सा. आदि ठाणा के साथ साध्वीवर्या श्री अमीपूर्णा श्रीजी म.सा., साध्वीवर्या श्री अमीदर्शना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री देवसूर तपागच्छ चारथुई जैन श्री संघ गुजराती उपाश्रय के अन्तर्गत श्री आगमोद्धारक भवन, सेठजी का बाजार,रतलाम (म.प्र.) में होने जा रहा है।

चार्तुमासः- पूज्य साध्वीवर्या श्री कल्पज्योति श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ, श्री पद्मप्रभु महाराज देवालय मेन बाजार, पोयनाड़ जिला राजगढ़ (महा.) में होने जा रहा है। प्रवेश 14 जुलाई को होगा।

धानेरा समाज में वर्षीतप पारणा सम्पन्न

सूरत- धानेरा समाज में वर्षीतप पारणा रामविहार वेसु में पूज्य गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री हेमप्रभ सूरीजी महाराजा, पूज्य आचार्य भगवंत श्री अर्हमप्रभसूरीजी महाराज के मार्गदर्शन में हुए वर्षीतप पारणा श्रमण-श्रमणी-श्रावक-श्राविका का 10 मई को सम्पन्न हुआ। साध्वीवर्या श्री अमितप्रज्ञा श्रीजी म.सा. का 100 वीं ओली का पारणा भी सम्पन्न हुआ। साध्वीजी को संयम जीवन के 50 वर्ष पूर्ण हुए है महोत्सव में 100 से अधिक साधु-साध्वी की निश्रा रही।

बड़ों से तो बालक अच्छे

दोनों पड़ोसियों के बालक आपस में उलझ पड़े, खेल-खेल मे छीना-झपटी, मारा-मारी हो गई। दोनों ने अपने माता-पिता से फरियाद की। उनकी शिकायत पर दोनों के अभिभावक लड़ पड़े। वर्षो पुरानी मित्राता में दारार पड़ गई। बोल-चाल, मिलना-जुलना, एक-दूसरे के यहां आना-जाना बंद हो गया।

किन्तु दूसरे ही दिन देखा कि दोनों बालक पुनः आपस में मिलकर साथ-साथ खेलने में लगे हैं। न उनमें कोई मनोमालिन्य है, न शिकवा मिला। दोनों के अभिभावकों ने अपनी भूल सुधारते हुए परस्पर क्षमायाचना की और स्वीकार किया कि बड़ों से तो बालक अच्छे, जो लड़कर भी साथ रहते हैं और हम साथ रहते हुए भी लड़ते हैं।

अंतिम चौमासे में 55-55 पुण्य-पाप का अध्ययन कर भगवान महावीर मोक्ष पधारे : सुधर्मास्वामी प्रभु महावीर के पाट पर विराजे

✻ शांतिलाल सगरावत, मंदसौर

श्रमण भगवान श्रीमहावीर स्वामी के 53 अनगार एक वर्ष संयम पालन करके पांच अनुत्तर विमानों के अत्यन्त उत्तम और महाविस्तीर्ण विमानों में देव रुप से उत्पन्न हुए। भगवान श्रीमहावीर स्वामी ने एक दिन में एक आसन पर बैठकर 54 व्याकरण प्रश्नों के उत्तर दिये।

भगवान श्री महावीर स्वामी ने अंतिम चार्तुमास मध्यम अपापानगरी की हस्तिपाल राजा की करण सभा कचहरी लेखशाला में मोक्ष रात्रि कार्तिक कृष्ण अमावस्या को स्वाति नक्षत्रा का चन्द्रमा के साथ योग जुड़ने पर रात्रि के पिछले भाग में पर्यक आसन में बैठे हुए 55 अध्ययन पुण्य के फल बतानेवाले और 55 अध्ययन पाप के फल बतानेवाले फरमा कर सिद्ध भद्र मुल यावत सर्व दुःखों से रहित हुए। उस समय भगवान की आयु 72 वर्ष की संपूर्ण हुई थी। छत्रांग नगर में नंद राजा के भव में राजपाट छोड़कर दीक्षा ली। एक लाख वर्ष तक संयम पालन किया जिसमें मासक्षमण-मास क्षमण की तपस्या करते हुए 1185645 मासक्षमण करते हुए 20 बोलों की आराधना करके श्रीमहावीर भगवान की आत्मा ने तीर्थकर नाम कर्म का बंध किया और देवलोक के पुष्पोत्तर विमान में देवरुप में उत्पन्न हुए।

यही वर्द्धमान बाद में श्रीमहावीर स्वामी बने। जीवन श्रीमहावीर आदेश्वर परमात्मा से प्रारंभ वर्तमान जन्म लिया। उन्होंने दुनिया को सत्य, अहिंसा का पाठ पढ़ाया। पूरी दुनिया को उपदेश दिए। उन्होंने दुनिया को पंचशील के सिद्धांत बताए। इसके अनुसार- सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय, अहिंसा, और क्षमा। उन्होंने अपने कुछ खास उपदेशों के माध्यम से कोशिश दुनिया को सही राह दिखाने की। अपने अनेक प्रवचनों से दुनिया का सही मार्ग दर्शन किया। जन्म करीब ढाई हजार साल पुरानी बात है। ईसा से 540 वर्ष पहले वैशाली गणतंत्र के क्षत्रिय कुण्डलपुर में पिता सिद्धार्थ और माता त्रिशला के यहां तीसरी संतान के रुप में चैत्र शुक्ल तेरस को वर्द्धमान का जन्म हुआ।

भगवान श्रीमहावीर 42 वर्ष से कुछ अधिक समय तक श्रमण पर्याय का पालन कर सिद्ध वृद्ध मुक्त हुए।

अवसर्पिणी काल के दुषम सुषमा नामक चौथे आरे के अंत में जब श्रमण भगवान श्रीमहावीर स्वामी इस भूमण्डल पर विचरण कर रहे थे उस काल उस समय में कल्प से लेकर समवसरण तक यावत् सापत्य और निरपथ्य गणधर देव सिद्ध हो गये। समवसरण के लिये वायुदेव एक योजन भूमि को शुद्ध करते हैं, मेघकुमार देवता सुगंधि जल से सिंचन ऋतु अधिष्ठायक देवता पांचवर्षी पुष्प से पृथ्वी की पूजा करते हैं उसके बाद व्यंतर देव पृथ्वी पर सवा कोश ऊंचा स्वर्णरत्न मणी मयपीठ की रचना करते हैं। वनस्पति देव चांदी का प्रथम गढ़ बनाकर एक हाथ ऊंची और एक हाथ चौड़ी 10 हजार सीढ़ियां तैयार करते हैं। ज्योतिष देव उसके ऊपर पांच हजार सीढ़ियोंवाला स्वर्णमय दूसरे गढ़की रचना करते हैं। यहां तिर्यच पशु पक्षी रहते हैं। 5000 सीढ़ियों वाले तीसरे गढ़ के मध्य में रत्नमय पीठ होता उसके मध्य में बारह गुना ऊंचा व एक योजन विस्तारवाला उत्तम सुन्दर अशोक वृक्ष होता है जिसकी चारों दिशा में चार सिंहासनों के आगे रत्नमय पाद पीठ प्रभु के पैर के नीचे रहता है। प्रथम गढ़ में देव द्वारपान होते हैं, दूसरे गढ़ में सभी दिशाओं में दो-दो देवियाँ द्वारपालिका होती है। तीसरे गढ़में पूर्व दिशा में सोम, दक्षिण दिशा में यम, उत्तर दिशा में घानद और पश्चिम दिशा में वरुण नामक द्वारपाल होता है। देशना के बाद प्रभु के आसन हेतु दूसरे गढ़ के ईशान कोण में छन्द होता है। मस्तक के पीछे भामण्डल स्थापित होता है।

भगवान श्रीमहावीर की उपस्थिति में जितनी भी दिशाएं होती है प्रभु के नेश्राय में होती है। 9 गणधर भगवान श्रीमहावीरस्वामी की उपस्थिति में मोक्ष पधार गये थे और गौतमस्वामी जिस रात्रि में प्रभु श्रीमहावीर मोक्ष पधारे उसी दिन उन्हें केवलज्ञान हो गया था। अतः ये दस गणधर निरपत्य रहे। सुधर्मा स्वामी को भगवान महावीर के निर्वाण पश्चात् चतुर्विध संघ ने मिलकर भगवान महावीर के पाट पर बिठलाया। पट्टधर बनने के बाद हुए सभी दीक्षार्थी शिष्य कहलाए। 12 वर्ष तक सुधर्मस्वामी छद्मस्थ रहकर केवलज्ञान-केवलदर्शन प्राप्त कर सर्वज्ञ सर्वदर्शी बनकर मोक्ष पधारने के कारण सापत्य कहलाए।

चार्तुमास में क्या करें : पूज्यनीय साधु-साध्वियों से प्रार्थना और निवेदन....

हमारे पूज्य संत समाज के नैतिक विकास व कुरीतियों को मिटाने हेतु उपदेश दें। जहां आवश्यक हो वहां जिनालय निर्माण व जिनबिंब स्थापना हेतु उपदेश तथा शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति हेतु विद्यालयों की स्थापना, स्वास्थ्य के लिए औषधालय की स्थापना। समाज में किसी तरह का भेदभाव आदि की प्रवृत्ति न पनपे। प्रभावना की आढ़ साधना कहीं खो न जाय। पत्रिका, पंपलेट, स्वयं की फोटो, बैनर, विज्ञापनबाजी, दोष पूर्ण सजावटी आदि फिजूलखर्ची से समाज को बचने की प्रेरणा दें। किसी प्राचीन अप्रकाशित आचार्य प्रणीत ग्रंथ का प्रकाशन की समाज को प्रेरणा दें। अपने उपदेशों में युवा पीढ़ी को धार्म से जोड़ने और अंधविश्वासों की समाप्ति की पहल हो। चार्तुमास में समाज को कुछ ऐसा दें जाय जो धर्म व समाज के लिए उपयोगी व उपकारी हो। धर्म प्रभावना तो करें लेकिन देह प्रभावना से दूरी बनाए रखें। समाज के पैसे का व्यय मितव्ययता के साथ हो जो उपयोगी और सार्थक हो। ऐसे उपदेश से दूरी बनाए रखें जिससे समाज के पैसे का व्यय मित्व्ययता के साथ हो जो उपयोगी और सार्थक हो। ऐसे उपदेश से दूरी बनायें रखे जिससे समाज के टुकड़े हों।

समाज में बढ़ रही अनैतिक घटनाओं के प्रति समाज को जागरुक करें। दिनोंदिन पारिवारिक जीवन में अपने ही लोगों से बढ़ रही दूरी के प्रति लोगों को उपदेश देकर आपस में हिल-मिलकर रहने की ऊर्जा प्रस्फुटित करें। जो आपकी चर्या में दूषण लगाये ऐसा कोई भी कार्य गृहस्थ को न करने दें। समाज को व्यसन मुक्त बनाने का उपदेश देकर उन्हें सही मार्ग दिखायें।

चार्तुमास के दौरान ऐसा कार्य किया जाय जिससे पूरी समाज लाभान्वित हो तथा समाज के पैसों की अनावश्यक बर्बादी न हो तथा तनिक भी अप्रभावना न हो पाये। प्रदर्शन वाले कार्यो की जगह दीर्घकालीन लाभ वाले कार्यो को प्रमुखता दें। मंदिर और साधुओं से युवा पीढ़ी दूर क्यों हो रही है, इस बात पर चिंतन करें और प्रेरणा दें कि वह मंदिर और साधुओं से जुड़े और प्रतिदिन मंदिर जायें, साधुओं के दर्शन, प्रवचन आदि की प्रेरणा युवावर्ग को दें। नैतिकता के प्रति युवावर्ग को मार्गदर्शन करें, अपने प्रवचन में समाज में एकता के लिये हमेशा लोगों को मार्गदर्शित करते रहे।

दुनियादारी का रंग

धार्मिक प्रवचन सुनते समय, श्मशान में अपने किसी प्रियजन की चिता जलते समय, बहुत बुरी तरह से रोगग्रस्त किसी रोगी से मिलते समय और क्रोध कर चुकने के बाद जो बुद्धि और भावना पैदा होती है यदि वह जीवन में उतर कर स्थायी हो सकी तो आज दुनिया के रंग-ढंग कुछ और ही होते। आदमी का जीवन कुछ और ही होता, उसके जीवन में बहार ही बहार होती। लेकिन होता यही है कि इन स्थितियों में उत्पन्न बुद्धि और भावना शीघ्र ही बदल जाती है। हम फिर दुनियादारी के रंग में रंग जाते है।

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लियेः-

बैंक का नामः- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाताः- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 06800200001425 IFSC Code:- IOBA0000680

चार्तुमास - एक भव्य काल....

पावस काल उपलब्धि का समय माना गया है। देश की सुख-समृद्धि खाद्य पदार्थो पर निर्भर होती है और खाद्य पदार्थ, अन्न, जल, शाक-सब्जी, फल-फूल, दूध-घी सबकी प्रचुरता समय पर अनुकूल वर्षा से ही संभव है, अतः वर्षाऋतु को प्रेयस का आधार कहा गया है। यह वर्षाऋतु जीव-जंतु, तृण-तरु और मानवीय ऊर्जा को वृद्धिगंत करती है। वैदिक सम्प्रदाय में चार्तुमास (पावसकाल) को धर्म और आध्यात्म से जोड़ते हुए विष्णु भगवान के विश्राम, आध्यात्म में लीनता का समय माना गया है और यह अषाढ़ शुक्ला एकादशी/देवशमी या एकादशी से कार्तिक शुक्ला एकादशी/देवोत्थान या देवठान तक का समय निर्धारित किया है। इस समय शादी-विवाह या लोक व्यवहार के काम रोककर धर्म-आराधना को विशेष महत्व दिया जाता है। जैन धर्म में अहिंसा को विशेष महत्व दिया गया है अतः वर्षा की रिमझिम में जीवों की उत्पत्ति अत्यधिक होती है, अतः विहार को रोक आहार को सूक्ष्म व संयमित कर आध्यात्म में रमण करने का प्रयास किया जाता है। यह समय आत्म जागरण व जीवन को प्रशस्त बनाने का काल माना गया है। इस काल को वर्षायोग अथवा चार्तुमास कहा गया। यह अषाढ़ शुक्ला चर्तुदशी-गुरु पूर्णिमा से प्रारंभ हो कार्तिक कृष्णा चर्तुदशी-दीपावली अमावस्या तक चार्तुमास के रुप में निश्चित है। आगमानुसार ही वर्तमान में श्रमण इस परम्परा का निर्वहन करते है। जैन मुनि- पैदल ही विहार करते है, वे किसी भी प्रकार के वाहन या पादत्राण (जूते आदि) का प्रयोग नहीं करते तथा अहिंसा महाव्रत का सूक्ष्मता से पालन करते है अतः वर्षाकाल में विहार-भ्रमण छोड़सीमित स्थान पर रहकर स्वपर कल्याण में अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा लगा देते हैं। चार्तुमास पर्वकाल का महामहोत्सव मनाने को प्रेरित करता है, आत्म-चिंतनआत्मविश्वास के साथ करते हुए दृढ़संकल्प की ऊर्जा आत्म गौरव को बढ़ा देती है।

चर्तुदशी का पावन दिवस जैन संघ के चार्तुमास स्थापना का पर्व है। गुरु पूर्णिमा का पावन पर्व जहां भगवान श्रीमहावीर के गुरुत्व आकर्षण से खिंचे आये शिष्य इन्द्रभूति गौतम की याद दिलाते है वहीं निर्ग्रन्थ गुरुओं का वीतराग स्वरुप, ज्ञानामृत बरसाती वाणी श्रावक-शिष्यों के अहोभाग्य का पुण्यफल प्रदान करने लगती है। भक्त गुरुओं को आवश्यक सामग्री भेंट करके व्रत-नियम के संयम में बांधकर स्वयं को कृतार्थ करते हैं। श्रावण पूर्णिमा रक्षबंधन, सन्तों की सहनशीलता, महाउपसर्ग में समता-साधना जैसे मानव की आँख खोल देती है। वात्सल्य अंग की उत्कृष्टता जैसे वर्तमान समाज को हिलाकर रख देता है। चार्तुमास में अवस्थित मुनिराज इन रहस्यों को खोल-खोल कर मानव को जीवन जीने की कला सिखाते हैं। धार्मिक शिक्षण-शिविर स्वाध्याय/संगोष्ठी, संस्कार-साधना सभी में उत्तरोत्तर तल्लीनता बढ़ाते हैं।

वर्तमानकाल में भी विद्वान संत मनीषी वर्षायोग में प्राचीन शास्त्रों के अनुवाद एवं आगम के आधार पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जो साहित्य सृजन कर रहे हैं उनमें सर्वाधिक कार्य इन्हीं दिनों होता है। संघ में संतों को विशेष भाषाओं का ज्ञान कराना शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन, व्याख्यान माला आदि का महत्कार्य वर्षायोग में सुचारुता से निरापद चलता रहता है अतः ज्ञान की पूंजी संग्रह इन दिनों की विशेष उपलब्धि है। यह काल भागमभाग का नहीं है अपितु पर्वो के स्वर्णकाल का है। अतः श्रमण और श्रावक इन दिनों व्रत-उपवास, संयम नियम की पुण्य-पूंजी को जी भरकर संग्रहीत कर लेते हैं। श्रावकों को देवपूजा, गुरुओं की सेवा-वैयावृत्ति, स्वाध्याय, संयम, तप और दान इन्हें करने में आनंद और तल्लीनता की उत्कृष्ता प्राप्त होती है वे प्रेयस से श्रेयस में लग जाते है ऐसा अमृत योग है यह वर्षायोग का भव्यकाल। हर नगरी में भी हो रही है वर्षायोग की तैयारिया हो रही है श्रमण संघ जो बरसायेगा ज्ञान का अमृत, श्रावकों को जगाकर लगा देगा आत्मोत्थान में, जन-जन के कल्याण में, उनका निर्ग्रन्थ निष्प्रही स्वरुप बदल देगा, समाज की विषमता और मानव कलुषता, अन्तर वाहर धर्म का प्रकाश-मंगल ही मंगल दशों-दिशाओं में।

हिंसक से हीन कोई नहीं

कुणिर्वरं वरं पंगुरशरीरी वरं पुमान्।
अपि सम्पूर्णसर्वांगो न तु हिंसापरायणः ॥

- श्री योगशास्त्र ग्रंथ

अर्थात्-कोढ़ी-लंगड़ा या बदसूरत व्यक्ति तो और भी अच्छा किन्तु सर्वागसुंदर और संपूर्ण अंगोपंगवाला भी यदि हिंसा में चूकचूर हो तो उसे अच्छा कैसे मानना ?

चार्तुमास में क्या करें हम और आप....

एक बार फिर चार्तुमास का काल हम सबके बीच है। हमारे पूज्य संतों और साध्वियों की पूरे भारत वर्ष में जगह-जगह भव्य तरीके से चार्तुमास की स्थापना होने जा रही है। चार्तुमास का समय आत्मसाधना व धर्माराधना का काल होता है। अहिंसा धर्म के पालन के लिये हमारे पूज्य संत वर्षाकाल के चार माह में एक स्थान पर रहकर आत्मसाधना और धर्म प्रभावना करते है। यह समय साधु और श्रावक दोनों के लिये महत्वपूर्ण होता है। साधुओं का योग मिलने से जैन समाज की लोक प्रभावना में वृद्धि होती है। उनके उपदेश व प्रेरणा से सामाजिक एकता का विकास होता है। स्कूल, अस्पताल, धर्मशाला आदि के निर्माण के द्वारा खुलते है। चार्तुमास के दौरान जो धर्म की प्रभावना होती है। वह अपने आप में देखने योग्य होती है। साधु के समागम से मानों उस स्थान पर एक नयी स्फूर्ति और जागरुकता देखने को मिलती है। अनेक ऐसे आयोजन इस दौरान परवान चढ़ते है जो वाकई प्रशंसनीय होते है लेकिन हमारे पूज्य संतों व श्रावकों को यह भी साधु में ध्यान रखना होगी कि कहीं भी चार्तुमास मात्र प्रदर्शन की भेंट न चढ़ जाये। प्रभावना के चक्कर में साधना कहीं खो न जाए। पिछले चार्तुमास की संख्या को संख्यात्मक वृद्धि करने वाला न साबित हो। नये जोश और जज्बे के साथ एक ऐसी उपलब्धि लेकर यह चार्तुमास जाये कि समाज के लिये सदियों तक यादगार बना रहे और साधु की साधना में भी ऐसी वृद्धि हो कि वह अपने रत्नत्रय का पालन कुछ इस तरह करें कि वे अपने मोक्ष मार्ग को जल्द प्राप्त कर सके।ब्राह्य प्रदर्शन के लिये धन को पानी की तरह बहाया जाता है, चार्तुमास के दौरान मंदिरों में अनेक बहुरंगीन बड़ी-बड़ी पत्रिकाएं भारी मात्रा में देखने को मिलती है, जिनमें करोड़ों रुपये व्यय किये जाते है, बाद में यह पत्रिकाएं रद्दी में चली जाती है। चार्तुमास के दौरान और भी अनेक ऐसे आयोजन होते है।

चार्तुमास को व्यर्थ के आडम्बरों से मुक्त रखने का प्रयास किया जाय। चार्तुमास पूर्ण सफल एवं सार्थक तभी माना जा सकेगा जब श्रमण का समय चार प्रकार की आराधना में व्यतीत हो एवं श्रावक का चार प्रकार की शुद्धियों से समन्वित हो। चार्तुमास में हमारे पूज्य साधु-साध्वियों को चाहिये कि वे दिशाविहीन युवा शक्ति को व्यसनों एवं भौतिकता में भटक चुकी है उसे सद्पदेश के माध्यम से सन्मार्ग प्रदान करें। समाज में मृत प्रायः स्वाध्याय की परम्परा को विकसित करें। सामूहिक रुप से स्वाध्याय की परंपरा प्रारंभ हो। घर बैठे ज्ञान की अच्छी-अच्छी बातें पढ़ने को मिले एवं जीवन सत्संस्कारित बने इस हेतु सत्साहित्य सुलभ करवाने हेतु वाचनालय प्रारंभ हो। चार्तुमास की सार्थकता के लिये मेरा पूजनीय संतों से विनम्र निवेदन है कि- जाति पथ एवं संत के नाम पर विभक्त समाज को प्रेम, वात्सल्य के माध्यम से अखण्डता की प्रेरणा प्रदान करें। समाज में चल रहे मृत्युभोज, रात्रि भोजन, बफै सिस्टम आदि बंद करवाकर **दिवा भोजन, दिवा विवाह** की प्रेरणा देकर एक आदर्श समाज तैयार कर सकते हैं। बच्चों में सत्संस्कारों का बीजारोपण करने की दृष्टि से रात्रिकालीन दैनिक एवं साप्ताहिक संस्कार शालाएं प्रारंभ करवा सकते हैं- शास्त्र-भंडारों का व्यवस्थित सूचिकरण करवा दें। आर्ष प्रणीत दुर्लभ ग्रंथ प्रकाशित करवाकर साहित्य प्रचार-प्रसार करवा सकते हैं। युवाओं का प्रतिदिन पूजन की प्रेरणा देकर उनकी दिनचर्या को सुव्यवस्थित कर समाज के भविष्य निर्माण में अपनी भूमिका निर्वाह कर सकते हैं। जैन परिवारों में अपनी भूमिका निर्वाह कर सकते हैं। जैन परिवारों में आये दिनों ऐसी अनैतिक घटनाएं घट रही है जो पहले कभी देखी-सुनी भी नहीं गई जो आह हमें शर्मसार करती है, उनकी रोकथाम के लिये अपने प्रवचनों के माध्यम से प्रेरणा देकर ऐसी घटनाएं समाप्त की जा सकती है। जैन समाज की एकता पर बल देते हुए समाज को एक सूत्र में पिरोने की प्रेरणा अपने प्रवचनों में दें, आज सबसे अधिक एकता की जरुरत हमें है। शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिये मदद की विभिन्न योजनाओं की प्रेरणा दें, ताकि हमारी समाज का कोई भी व्यक्ति आर्थिक तंगी से न जूझ सके, ताकि वह अपना व परिवार का लालन-पालन ठीक ढंग से कर सके। चार्तुमास में जो अपव्यय होता है, यदि वह समाजोपयोगी कार्यो में लगा दिया जाय तो एक बहुत बड़ी उपलब्धि हो सकती है। चार्तुमास इसलिये होता है कि साधु-संत अहिंसा का व्रत का पालन कर सके, साथ ही अपनी आत्मसाधना भी पूरी एकाग्रता के साथ कर सके। लेकिन दुःखाद यह है कि आज चार्तुमास के दौरान बहुत-सी विसंगतियां देखने को मिलती है, जो ठीक नहीं है। भारत की वसुन्धरा पर जैन संस्कृति के विकास की धारा प्रवाहित हुई है। श्रुतज्ञान के संरक्षण, गुफा,मंदिरों एवं ध्यान केन्द्रों का निर्माण, शास्त्र लेखन तथा श्रुत भण्डारों की व्याख्या तथा उतंग भवन जिनालयों के निर्माण हमारे महान आचार्य श्रमण संघों के चार्तुमास के मूर्तिमान प्रतीक है। जहां संतों का चार्तुमास होता है, वह तीर्थ बन जाता है। चारों ओर विकास की संभावनाएं स्वर्णिम हो जाती है। विकास की धारा प्रवाहित हुई है। श्रुतज्ञान के संरक्षण, गुफा, मंदिरों एवं ध्यान केन्द्रों का निर्माण, शास्त्र लेखन तथा श्रुत भण्डारों की व्याख्या तथा उतंग भवन जिनालयों के निर्माण हमारे महान आचार्य श्रमण संघों के चार्तुमास के मूर्तिमान प्रतीक है। जहां संतों का चार्तुमास होता है, वह तीर्थ बन जाता है। चारों ओर विकास की संभावनाएं स्वर्णिम हो जाती है।

।। श्री परमात्माय नमः ।।

जीवदया फंड

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1
मो.: 09825414470 / 9820078772
स्थापना वि. सं. 1962
इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744
PAN : AAATS8024L

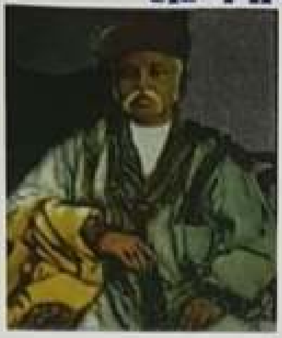

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्‌गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासी के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले और बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है। और शेठश्री के उत्तम पुण्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है। जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है।

हमारे आंगन में आनेवाले बेजुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है। और पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उनको संभालकर रखा जाता है।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है। अहिंसा और जीव के उपर मैत्री। सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दीनो का भी बहुत बडा महत्व है। जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख और अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है और आपके स्वजन की सद्‌गति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया और करुणामय बनाये।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था, उस समय में कुल २५९१ जीवो को छुडवाया गया है।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत और मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है। जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 0012010000 1219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख और मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है और नरकगति के कर्म का और अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ और सर्वोत्तम कार्य है।

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

नलीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

दान अेज सफल जीवन

वर्ग पहेली क्रमांक-350

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1		2	3	■	4		5	
	■	6				■		■
7	8	■		■	9	10		11
■	12	13		14	■		■	
15	■		■		■		■	
	■		■	16	17		18	■
19	20		21	■		■	22	23
■		■	24			25	■	
26				■	27			

बाएं से दाएंः-

1- मत कर माया को अभिमान, मत कर कायो को-- काया गार से काची (4)
4- भ.वासुपूज्यजी के पिता का नाम (4)
6- अष्ट मंगल में से एक---- (4)
7- जहां ना पहुंचे---- तहां पहुंचे कवि (2)
9- प्रयागराज के पुरिमताल से मोक्ष सिधारी---- देवी (2,2)
12-वीरायतन धर्मस्थल के---- है उपाध्याय अमर मुनि (4)
16-नलिनी गुल्म विमान सा विश्व प्रसिद्ध तीर्थ, जो फालना के निकट स्थित है रा---- (4)
19-शंखेश्वर के निकट श्री चंद्रप्रभस्वामी का तीर्थ ज---- (4)
22-नमस्कार महामंत्र का प्रथम शब्द (2)
24-जिनशासन की सोलह मूर्तियों में से एक----(4)
26-पारसनाथ भगवान को यह भी कहते है (2,2)
27-महावीर स्वामी वर्तमान चोबीसी के अंतिम---- है (4)

ऊपर से नीचेः-

1- जैसलमेर के निकट सुंदर कारीगरी युक्त 3 मंदिर और दादावाड़ी का तीर्थ---- सागर (3)
2- चार कषायों में से एक----(2)
3- भ.अरनाथजी का लांछन---- (4)
4- समय के तीन भेद है : भूत, भविष्य और----न (3)
5- भ.संभवनाथजी की दीक्षा कल्याणक तिथि---(3)
8- ब्राह्मण या विद्वान के लिये प्रयुक्त शब्द----(2)
10-कुक्षी के निकट भ.आदिनाथ की फिरोजा वर्ण की प्रतिमा वाला तीर्थ----र (4)
11-मे---- र न्हवरावें हो सुरपति (1,2)
13-पांच सौ आचार्यो द्वारा इस तीर्थ पर प्रथम बार आगम लिखे गये थे----र (4)
14-विश्वविख्यात संस्कृत ग्रंथ राजतरंगिनी के रचनाकार---- (3)
15-आषाढ़ी श्रावक द्वारा स्थापित तीन प्रतिमाओं में से एक महुड़ी के निकट इस तीर्थ में है (3)
17-अहमदाबाद शहर का प्राचीन नाम (4)
18-तुमसे लागी लगन लेलो अपनी----, पारस प्यारा, मेटो मेटो जी संकट हमारा (3)
20- अलवर शहर में बिराजे है, श्री राव---- नाथ भगवान (1,2)
21-महावीर स्वामी का ही एक नाम वी---- (1,2)
23-श्री जीनराज समोशरे राजगृही उद्यान, स---- ण देवरच्यो, बैठे श्री वर्धमान (3)
25-बीस विहरमान---- कर में प्रथम है श्री सीमंधर स्वामी (4)

वर्ग पहेली क्रमांक-349 का परिणाम

शा	न्ति	ना	थ	■	सु	■	श्रा	व
ल	■	म	■	अ	म	रा	व	■
क	ल	■	भ	म	ति	■	क	ल
■	द	ना	व	र	■	म	■	ध्व
सा	र	थी	■	सा	■	ग	रा	ज
व	■	मु	■	ग	ण	धा	र	■
न	न्द	■	प	र	मो	■	त्ता	रा
■	न	ग	र	■	■	आ	■	व
सा	मु	■	डा	■	नं	दि	षे	ण

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-350

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

प्रश्न- ऐसा क्या है ? पहेचानिए...!

1- ऐसा कौन सा ''वार'' है जो सबको पसंद है ?
2- ऐसा कौन सा ''यार'' है जो सबका नुकशान करता है ?
3- ऐसा कौन सा ''कान'' है जिसमें मनुष्य रहता है ?
4- ऐसा कौन सा ''ताप'' है जो अपना पाप कम कर सकता है ?
5- ऐसी कौन सी ''कार'' है जो मनुष्य को मनुष्य से जुदा कर देती है ?
6- ऐसा कौन सा ''रण'' है जिसमें सभी को पसार होना पड़ता है ?
7- ऐसा कौन सा ''वार'' है जो बच्चों को पसंद है ?
8- ऐसी कौन सी ''मत'' है जो है ? जो सभी को प्यारी है ?
9- ऐसी कौन सी ''यात्रा'' है जो घर बैठे लाभ दिलाती है ?
10- ऐसा कौन सा ''वार'' है जिसमें सभी शामिल होते है ?
11- ऐसी कौन सी ''कार'' है जो सभी पापों को नष्ट कर देती है ?

✻ बात पर गौर करना : पत्तों सी होती है कई रिश्तों की उम्र, आज हरे, कल सूखे।

✻ क्यों न हम, जड़ों से रिश्ते निभाना सीखें।

✻ नसीहत, नर्म लहजे में ही अच्छी लगती है, क्योंकि दस्तक का मकसद, दरवाजा खुलवाना होता है, तोड़ना नहीं।

✻ घमंड किसी का भी नहीं रहा, टूटने से पहले गुल्लक को भी लगता है कि सारे पैसे उसी के है।

✻ जिस बात पर कोई मुस्कुरा दे,बात बस वहीं खूबसूरत है।

✻ उम्र थका नहीं सकती, ठोकरें गिरा नहीं सकती.... अगर जीतने का इरादा हो तो परिस्थितियां भी हरा नहीं सकती।

✻ जब व्यक्ति असंतुलित है तो उसका तीर्थ, पूजा-पाठ सब व्यर्थ है।

वर्ग पहेली क्रमांक-349 के परिणाम

विजेता:-

1-भारती जैन देवास (म.प्र.) - प्रथम
2-रेशमा बहन कोठारी, नीमच (म.प्र.) - द्वितीय
3-कुसुम गौतम जैन,आगर (म.प्र.) - तृतीय

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-349 के परिणाम

विजेता:-

1-रेशमा बहन कोठारी, नीमच (म.प्र.) - प्रथम
2-मंजुबाला फाफरिया, नलखेड़ा (म.प्र.) - द्वितीय
3-प्रीसा जैन, शुजालपुर सिटी (म.प्र.) - तृतीय

सही उत्तर-

1- पुरुषादानी, 2- अनंतलब्धि निधान, 3-परम काम विजेता, 4- कलिकाल सर्वज्ञ, 5- जगतगुरु, 6- नवांगी टीकाकार, 7- परमार्हत् (जीव दया प्रेमी), 8- अनंत बुद्धिनिधान, 9- पूज्यपाद आगमोद्धारक, 10- चौदह पूर्व के ज्ञाता (श्रुतकेवली), 11-अंतिम चरम केवली, 12- अंतिम राजा।

इनके भी उत्तर सही थे:-

सुधा जैन, उज्जैन, कृष्णकुमार जालोरी, विदिशा, चंदनबाला जैन, भारती जैन, प्रभा जैन देवास, विद्या संघवी, बदनावर।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-7-2024 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमश:51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

वागड़ नरेश के संयमी जीवन के 41 वर्ष पूर्ण हुवे : संयम संवेदना का आयोजन हुआ

✻ चार्तुमास श्री सिद्धगिरीराज की छत्रछाया में होगा।

अहमदाबाद- श्री लक्ष्मीवर्धक सोसायटी शांतिवन पालड़ी में पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा के तीसरे सुशिष्य पूज्य आचार्य देवेश श्री मृदुरत्न सागर सूरीजी महाराज ने संयम जीवन की 41वर्ष पूर्ण होने के प्रसंग पर संयम संवेदना कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।इस महोत्सव में आचार्य श्री मृदुरत्नसागर सूरीजी, मुनिश्रीमोक्षरत्न सागरजी,मुनिश्रीपद्म रत्न सागर जी की निश्रा रही।दिनांक 14 जून को आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में गुरुभक्त जुड़े एवं गुरु गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। जून के तृतीय सप्ताह तक आपश्री ने अहमदाबाद के विभिन्न संघों में शासन प्रभावना की इसके बाद आपश्री का विहार चार्तुमास हेतु पालीताना की ओर हुआ है। श्री सिद्धक्षेत्र शत्रुंजय महातीर्थ पालीताना में आपश्री का आगामी चार्तुमास होने जा रहा है जहां चार्तुमासिक प्रवेश 19 जुलाई को होगा। **चार्तुमास के लाभार्थी श्रीमती सम्पत्तबाई बापूलालजी चौधरी परिवार जीरण(नीमचवाले) है। चार्तुमास साबर मती धर्मशाला में होगा।**

आध्यात्मिक योगी की निश्रा में भोपावर में श्री शांतिनाथ प्रभु का जन्म दीक्षा कल्याणक पर त्रिदिवसीय आयोजन

✻ चार्तुमास अहमदाबाद में होगा।

भोपावर- पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य पूज्यपाद गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागर जी म.सा. आदि ठाणा श्रमण-श्रमणीवृंद की निश्रा में अमृत निश्रा में विश्व विख्यात श्री शांतिनाथ प्रभु के महातीर्थ भोपावर में परमात्मा के जन्द दीक्षा कल्याणक पर त्रिदिवसीय अट्ठम तप आराधना के साथ त्रिदिवसीय आयंबिल एकासणा एवं बियासणा का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों ने तप आराधना में भाग लिया। यह आयोजन दिनांक 4 से 6 जून तक तथा दिनांक 7 जून को तपस्वियों का पारणा हुआ। मालवा के अनेक श्रीसंघ में शासन प्रभावना करते हुए आपश्री आदि का विहार गुजरात की ओर हुआ पूज्यश्री का चार्तुमास श्री मुनिसुव्रत स्वामी स्काय सिटी जैन श्री संघ क्लब रोड़ -7 महाराजा अग्रसेन भवन के पास, स्कायसिटी टाउनशीप, शेला, अहमदाबाद-58 (गुज.) में में होगा । प्रवेश 14 जुलाई को होगा।

श्री गच्छाधिपतिश्री का चार्तुमास पेपराल में

पेपराल- गुजरात के पेपराल में पूज्यपाद आचार्यदेव श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी महाराजा आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद का चार्तुमास पोपराल उत्तर गुजरात में होने जा रहा है। आपश्री का प्रवेश दिनांक 7 जुलाई को होगा।

कु. तोरल बनी साध्वीजी महौजसयशा श्रीजी

भिवण्डी- सौधर्म बृहत्तपागच्छीय गच्छाधिपति आचार्य श्री जयानन्द सूरीजी म.सा. के वरदहस्तों से जेठ सुद-3, 9 जून को मुमुक्षु कु. तोरल अशोकजी कालुजीवाला आहोर निवासी को रजोहरण प्रदान कर नूतन नामकरण ''साध्वीजी महोजसयशा श्रीजी'' किया गया। भिवण्डी में शिवाजी चौक के निकट श्री राजेन्द्रसूरि संयम वाटिका कर्वे ग्राउण्ड में 70+श्रमण-श्रमणी भगवंतों एवं 4000+भाविकों की उपस्थिति में बिना पंखे, कूलर या एसी व बिना फ ोटो-विडियो के यह आयोजन सम्पन्न हुआ। स्वामी वात्सल्य में सभी को बैठाकर भोजन की व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम में उपस्थित श्री मदुराई जैन संघ ने सन् 2025 के चार्तुमास हेतु पूज्य आचार्यश्री को विनंती की। श्री राजस्थान जैन संघ, थाने व डोम्बिवली द्वारा शेषकाल में पधारने हेतु विनंती की गयी।

लुधियाना में चार्तुमास

लुधियाना- श्री शांतिनाथ भगवान की छत्रछाया में वल्लभ समुदाय के गच्छाधिपति जैनाचार्य श्री विजयधर्म धुरंधर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री विजय इन्द्रदिन कम्युनिटी सेन्टर, समुद्रनगर, सुन्दरनगर लुधियाना (पंजाब) में होने जा रहा है। प्रवेश दिनांक 16 जुलाई को होगा।

श्री शिखरजी से नेपाल तक शासन प्रभावना कर 5 तीर्थंकर परमात्मा की जन्मभूमि अयोध्या को वंदना कर युवा प्रबोधक जैनाचार्य का चार्तुमास हेतु जयपुर की ओर विहार

*** अयोध्या से रामजन्म भूमि के श्री चम्पकराय, उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगीजी के साथ सौजन्य भेंट की।**

*** कानपुर-नईदिल्ली-लखनऊ में शासन प्रभावना का इतिहास सर्जित किया।**

*** जयपुर में चार्तुमास प्रवेश 14 जुलाई को होगा।**
जयपुर में 50 दिन के चार्तुमास करने के लिये धर्मिष्ठों को आमंत्रण है

*** झारखण्ड, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, राजस्थान के साथ नेपाल में भी सागर समुदाय का परचम लहराया।**

*** मुनिश्री उदयरत्नसागरजी एवं मुनिश्री उत्तमरत्नसागरजी म.सा.पालीताना में चार्तुमास करेंगे। * मुनिश्री उज्जवलरत्नसागरजी का चार्तुमास इचलकरंजी में।**

नईदिल्ली- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण जैनाचार्य श्री नवरत्न सागर सूरीश्वरजी महाराजा के अभूत पूर्व आर्शीवाद और पूज्यश्री नक्शे कायम पर चलते हुए नित्यप्रति शासन प्रभावना के नये इतिहास का सर्जन कर सागर समुदाय के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए सागर समुदाय की अभिवृद्धि कर युवा श्रमण को सम्मिलित करते हुए गुरुदेव के स्वप्न को साकार कर रहे युवा जैनाचार्य पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी महाराजा अब जयपुर में चार्तुमास कर नवीन इतिहास बनाने जा रहे है। यहां आपश्री का भव्य चार्तुमास प्रवेश 14 जुलाई को होने जा रहा है। शिखरजी में प्रतिष्ठा नवपद ओलीजी के बाद नेपाल की यात्रा कर अयोध्या में पांच तीर्थंकरों की जन्मभूमि को वंदन किया। यहां रामजन्म भूमि ट्रस्ट के चम्पकराय से सौजन्य भेंट हुई। लखनऊमें उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगीजी से 26 मिनिट तक भेंट कर दो संतों ने विचार विमर्श किया। यहां से कानपुर में शासन प्रभावना करते हुए नईदिल्ली आगमन हुआ। यहां विभिन्न श्री संघों में दर्शन वंदन करने के साथ अनेक राजनैतिक नेताओं से सौजन्य भेंट की। यहां से अब आपश्री का विहार जयपुर की ओर विहार किया है। पूज्यपाद गुरुदेव श्री मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नव रत्नसागरसूरीजी महाराजा भोमियाजी महाराज ने गुरुदेव के गुरुकुल के शासन प्रभावक युवा प्रबोधक जैनाचार्यश्री का शिखरजी बुला लिया चैत्र नवपद आली की आराधना के साथ प्रतिष्ठा का आयोजन ने आद्भूत माहौल का निर्माण कर दिया। यहां से आपश्री नेपाल की पुण्य भूमि की स्पर्शना करते हुए महामांगलिक प्रदान कर कानपुर होते हुए मई की तीसरे सप्ताह में दिल्ली के लिये विहार किया था, यहां से आपश्री ने जयपुर की ओर विहार आरंभ किया है **सेक्टर नबंर - 4 एम .पी.एस के पास जवाहरनगर जयपुर में आपश्री का चातुमार्सिक मंगल प्रवेश दिनांक 14 जुलाई को होगा।** चार्तुमास प्रवेश के लिये तैयारियां चल रही है। इसके

साथ ही जयपुर चार्तुमास में होने वाले आयोजनों के साथ उपधान तप करवाने की भी चर्चा चल रही है।**पूज्यश्री के सुशिष्य मुनिश्री उदय रत्नसागर और उत्तमरत्नसागरजी म.सा. का चार्तुमास श्री नवरत्न धाम पाली ताना में घोषित हुआ है। मुनिश्री उज्ञवलरत्नसागरजी का चार्तुमास इचलकरंजी में होगा**

जिन शासन की अद्भूत भक्ति के साथ गुरुदेवश्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा की पाट परम्परा को उज्जवलता प्रदान करने का कार्य जो कार्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वर जी महाराजा के द्वारा संयम जीवन में किया जा रहा है उसकी तुलना में करना आसान नहीं और न ही शब्दों से उसे बंधा जा सकता है। पूज्य युवाचार्य श्री का पुण्यबल और पुण्य का उदय होने के साथ यह निश्चित है कि पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा देह त्याग करने के बाद आपका भरपूर आर्शीवाद युवा आचार्य भगवंत को प्राप्त हो रहा है। युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी महाराजा परमात्मा श्री वीर प्रभु के शासन की अभिवृद्धि के लिये अपने सम्पूर्ण पुण्यबल का सुनियोजित उपयोग कर स्वयं और आपश्री ने गुरुकुल के युवा मुनिपुंग न जिन शासन की भरपूर प्रभावना कर देश भर में जैनत्व का नया इतिहास रच दिया हैं। युवा श्रमण भगवंतों ने अद्भूत शासन भक्तिकर युवा और वरिष्ठधर्मिष्ठों को आकृषित कर जैनत्व का सम्मान किया पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल ने श्री वीरप्रभु के शासन को उज्जवल बनाने के लिये वर्तमानकाल में जैनत्व का शंखनाद कर रहे है।

चार्तुमास.... चार्तुमास....!

✻ प.पू.आगमोद्धारक सरस्वती पुत्र गच्छाधिपति श्री आनन्दसागर सूरीश्वरजी म.सा. के समुदायवर्ती प.पू. सा.भ.श्री अर्पितगुणा श्रीजी म.सा. पू.सा. भ.श्री रत्नगुणा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-9 का चार्तुमास प्रवेश, शासन सम्राट, बाल ब्रह्मचारी श्री विजय नेमी सूरीश्वरजी समुदाय के सुदीर्घ संयम पर्यायी प.पू.आ.भ.श्री विजयरत्नप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. तथा विद्ववर्य आ. भ. श्री विजयरत्नकीर्ति सूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा के साथ 12 जुलाई को धुरंधरसूरी समाधि भवन (उपाश्रय), शांतिवन के पास, पालड़ी अहमदाबाद में शासन प्रभावना के साथ सम्पन्न होगा।

✻ पूज्यपाद आचार्य देवश्री रत्नाचलसूरीजी महाराज एवं साध्वी श्री शीलरत्ना श्रीजी म.सा. का चार्तुमास श्री साबरमती मोटेरा जैन श्वेतांबर मूर्ति पूजक संघ पुष्पा बहन जैन आराधना भवन मंदिर के पास में सगाथ-4 मोटेरा स्टेडियम, मेट्रो के नीचे, मोटेरा-अहमदाबाद 380005 (गुज.) में होगा। प्रवेश 10 जुलाई का है।

रेसकोर्स इन्दौर में चार्तुमास

इन्दौर- पूज्यबाद बंधु बेलड़ी आचार्य श्री के प्रशिष्य गणिवर्य श्री पद्मचंद्र सागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ रेसकोर्स रोड़, इन्दौर (म.प्र.) में होने जा रहा है। आपका प्रवेश 30 जून को होगा।

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ महातीर्थ में चार्तुमास

नाकोड़ा- राष्ट्रसंत पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री चन्द्राननसागर सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में चार्तुमास का भव्य आयोजन होने जा रहा है। श्री नाकोड़ा दर्शन चार्तुमास 2024 के अंतर्गत चार्तुमास करनेवाले धर्मिष्ठों से फार्म भरवाये जा रहे हैं। सम्पर्क सूत्र-9821154051

आबु देववाड़ा में ध्वजारोहण हुआ

देववाड़ा- सेठ श्री कल्याणजी परमानंदजी पेढ़ी के अंतर्गत श्री आबु देलवाड़ा के जिन मंदिर का ध्वजारोहण महोत्सव 8 से 10 जून तक त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ मनाया गया। दिनांक 8 जून को मंदिरजी का शुद्धिकरण तथा दिनांक 9 जून विमल वसही जिनालय का 18 अभिषेक रात्रि भक्ति तथा आबु देववाड़ा पर विशिष्ट आयोजन हुआ। 10 जून को ध्वजारोहण तथा सत्तर भेदी पूजन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई।

आहोर में चार्तुमास

आहोर- श्री विमलनाथ जैन पेढ़ी के द्वारा आहोर में भव्य चार्तुमास का आयोजन होने जा रहा है। पूज्य आचार्य देव श्री विजय रविसूरीजी महाराजा एवं आचार्य देवश्री विजय ललितशेखर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश दिनांक 17 जुलाई को होगा। पूज्यश्री का चार्तुमास पारसवाड़ी-सदर बाजार पोस्ट-आहोर (जालोर) आहोर-(राज.) में होने जा रहा है। लाभार्थी श्रीमती बदामीबाई मोहनलाल जी बंदा मुथा परिवार है।

श्रावण वदी -अमावस्या रविवार दिनांक 04 अगस्त 2024 को
पूज्य आगमोद्धारकश्री का जन्म दिवस आ रहा है

यह वर्ष
पूज्यपाद आगमोध्दारक
श्री सागरानंदसूरीजी महाराजा
के जन्म का 150 वां वर्ष है जन्म दिवस
श्रावण वदी अमावस्या दिनांक 4 अगस्त 2024
को आपके श्रीसंघ में पूज्यपादश्री के
स्मरण स्वरुप पंचान्हिका महोत्सव
का आयोजन कर गुरु गौरव गाथा के साथ
गुणानुवाद सभा करने की प्रेरणा है।

यह है सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति वचनसिद्ध जैनाचार्य पूज्यपाद गच्छाधिपति श्रीनरदेवसागरसूरीजी महाराजा

- ✻ आपके श्रीमुख से जो निकलता है वह हो जाता है, इसलिये आपश्री वचनसिद्ध तीर्थ है।
- ✻ प्रतिदिन आधी रात्री में जो जाप में तल्लीन बन जाते है इसलिये आप साधना तीर्थ है।
- ✻ जिनके रग-रग में परमात्मा के शासन के प्रति वफादारी है इसलिये आप शासन तीर्थ है।
- ✻ देव गुरुधर्म के आजीवन उत्कृष्ट आराधक होने से आप आराधना तीर्थ है।
- ✻ जिनके संपर्क में आनेवाला पवित्र बन जावे इसलिये आपश्री ऊर्जा तीर्थ है।
- ✻ शास्त्रों के गहन रहस्यों के जो गंभीर जानकार है इसलिये आपश्री ज्ञानतीर्थ है।
- ✻ संघ समुदाय शासन के आपश्री मोक्षमय है इसलिये आप सौभाग्य तीर्थ है।
- ✻ संयम की शुद्धि और शुद्धि से संयम जीवन जीनेवाले आप संयम तीर्थ है।
- ✻ जो महापुरुष ज्योतिष के प्रकांड विद्वान है।
- ✻ जो महापुरुष वचनसिद्ध है और जिनका संयम शुद्ध है।
- ✻ जो महापुरुष 64 वर्ष से अखंड नवपदजी ओली की आराधना कर रहे है।
- ✻ जो महापुरुष 9-9 वर्षीतप के आराधक है।
- ✻ जो महापुरुष न्याय-व्याकरण-काव्य-छंदशास्तर-आगमों के विशिष्ट ज्ञाता है।
- ✻ जो महापुरुष संस्कृत भाषा के मास्टर है।
- ✻ जो महापुरुष भारतभर के अनेक संघों में वर्षीतप की प्रेरक बन हजारों तपस्वीओं के उपकारी है।
- ✻ जो महापुरुष भोपावर तीर्थ, अभ्युदयपुरम् कल्याण मंदिर तीर्थ जैसे तीर्थों के मुख्य प्रतिष्ठाचार्य है।
- ✻ जो महापुरुष सरलता के भंडार है।
- ✻ जो महापुरुष लगातार 36-36 वर्षों से श्री भगवतीजी आगम के चातुमार्सिक प्रवचन दे रहे है।
- ✻ जो महापुरुष गुजरात के वाव के प्रथम आचार्य भगवंत है। ✻ जो महापुरुष ज्योतिष के प्रकांड विद्वान है।
- ✻ जो महापुरुष वचनसिद्ध है और जिनका संयम शुद्ध है।
- ✻ जो महापुरुष 64 वर्ष से अखंड नवपदजी ओली की आराधना कर रहे है।
- ✻ ऐसे महासंयमी-महापवित्र महापुरुष अब सागर समुदाय के गच्छाधिपति है।

श्री शंखेश्वर से गिरनार महातीर्थ का छःरि पालित संघ लगभग एक महिने का रहेगा।

जूनागढ़- श्री सिद्ध सावन कल्याणक भूमि तीर्थोद्धार समिति के द्वारा श्री शंखेश्वर से श्री गिरनार महा तीर्थ का छःरि पालित यात्रा संघ का आयोजन होने जा रहा है। पूज्य आचार्य भगवंत श्री धर्मरक्षितसूरीजी एवं श्री हेमवल्लभ सूरीजी आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी की निश्रा में श्री शंखेश्वर से श्री गिरनार महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ आयोजित होने जा रहा है। श्री शंखेश्वर से संघ का प्रयाण 21 नवंबर को होगा, यहां से 29 नवंबर को बढ़वाण आगमन होगा। दिनांक 30 नवंबर को बढ़वाण से आरंभ होगा। दिनांक 12 दिसंबर को जेतपुर से चलकर 17 दिसंबर को गिरनार पहुंचकर संघ माल होगी।

सागर समुदाय के जैनाचार्यश्री देवचंद्र सागर सूरीजी का दुर्घटना में घायल हुए

भावनगर- गच्छाधिपति परम पूज्य आचार्य देव श्री देवेन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य परम पूज्य आचार्यदेव श्री देवचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. का दिनांक 17 जून को प्रातःकाल पालीताना के लिए विहार के समय लग्जरी बस द्वारा एक्सीडेंट हो गया। सिर में गंभीर चोंट आई है। गंभीर स्थिति में आपको भावनगर से अहमदा बाद ले जाया गया है है। ईलाज चल रहा है। आगमोद्धारक परिवार के द्वारा शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की है।

श्री गिरनार महातीर्थ में 99 यात्रा

गिरनार- दादा श्री नेमीनाथ प्रभु की छत्राछाया में पूज्य आचार्यदेवश्री विजय जिनेशरत्न सूरीश्वरजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में 99 यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। यात्रा के प्रवेश पत्र 1 दिसंबर 2024 में दिये जायेंगे जिसमें सभी जानकारी दी जायेगी। श्री उपनगर जैन संघ मेहसाणा के द्वारा यात्रा संचालित होगी।

कोढवा में चार्तुमास

पूना- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य पूज्य आचार्य भगवंत श्री विराग सागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा-3 चार्तुमास सुनिश्चत हुआ है। पूज्य साध्वीवर्या श्री सिद्धीपूर्णश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-18 का चार्तुमास श्री शांतिनगर श्री संघ और श्री यशोधन श्री संघ में होगा। इसके साथ श्री महावीर डिलाईट संघ में श्री पूज्य साध्वीवर्या आराधना शिविर आदि आयोजन में निश्रा प्रदान करेंगे।

साध्वीवर्या श्री शीलरेखा श्रीजी का चार्तुमास देवास में

देवास- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री शीलरेखा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-7 का चार्तुमास श्री आदिश्वर जैन श्वेतांबर मंदिर, बड़ा बाजार, देवास (म.प्र.) में होने जा रहा है। आपश्री का चार्तुमास प्रवेश 16 जुलाई को होगा।

चार्तुमास.... चार्तुमास....!

✲ साध्वीवर्या श्री हेमप्रभा श्रीजी म.सा., सागर समुदाय की साध्वीवर्या की सुशिष्या साध्वी श्री हितेषाश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री रत्नेषा श्रीजी म.सा. का चार्तुमास नीनोर जिला प्रतापगढ़ (राज.) में होगा। प्रवेश दिनांक 12 जुलाई को होगा।

✲ पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री धर्मयश सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा का चार्तुमास श्री संभवनाथ जैन मंदिर जागली गली, बोरिवली (वेस्ट) मुंबई (महा.) में होने जा रहा है। आपका चार्तुमास प्रवेश दिनांक 7/7/2024 को होगा।

✲ कर्नाटक के हुबली में चार्तुमास प्रवेश के लिये पू.पं. परमयश विजयजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश दिनांक 3/07/2024 को श्री वासुपूज्य जैन मंदिर अरिहंत सोसायटी, कुसूगल रोड़ केशवपुरा, हुबली (कर्नाटक) में होगा।

✲ पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री हेमचंद्रसूरीजी महाराज की आज्ञा से आचार्यदेव श्री महानंदसूरीजी महाराज आदि ठाणा-2 का चार्तुमास साध्वी श्री मोक्षनंदिता श्रीजी आदि ठाणा-3 के साथ श्री चन्द्रप्रभ स्वामी जैन देरासर 186 राजाराम मोहनराय रोड़, प्रार्थना समाज मुंबई-4 (महा.) में होने जा रहा है। प्रवेश 7 जुलाई को होगा।

आचार्यश्री का चार्तुमास प्रवेश

हिवड़ी- गच्छाधिपति आचार्य श्री जयानन्दसूरीश्वरजी का मुनि मंडल सह 16 जून को थाने नगर में पर्दापण होगा। विभिन्न संघों में होते हुए 7 जुलाई को पद्मावती सोसायटी-कल्याण पधारेंगे एवं 12 जुलाई को श्री राजस्थान जैन संघ, बाजार पेठ, कल्याण में चार्तुमास हेतु भव्य प्रवेश होगा।

बंधु त्रिपुटी मुनि का चार्तुमास पवेश गदक हुगली में होगा

सुनेर- जैनाचार्य अपूर्व मंगल रत्नसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल के बंधु त्रिपुटी मुनि प्रवर श्री आगम प्रश्म- व्रजरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में मालवा में अनेक जिनमंदिर की प्रतिष्ठ ध्वजारोहण अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक श्री मनोज कुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन प्रेरणा में सम्पन्न करवाकर जिन शासन की जोरदार प्रभावना की है । **मुनि भगवंतों का यहां से गदक कर्नाटक की ओर आपका विहार हुआ है जहां आपका आगामी चार्तुमास** श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर, गौरीशंकर लॉज के सामने, स्टेशन रोड़, गदग (हुगली) कर्नाटक में होने जा रहा है।

इचलकंरजी में चार्तुमास

इचलकंरजी- श्री राजस्थान जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज के सुशिष्य पूज्य मुनि भगवंत श्री उज्ज्ववलरत्नसागरजी महाराज आदि ठाणा-3 का चार्तुमास होने जा रहा है।

उज्जैन में उपधान तप मालारोपण 2 जून को

उज्जैन- पूज्यपाद श्रीजैनाचार्य श्री मुक्तिसागर सूरीजी एवं आचार्य देव श्री अंचल मुक्ति सागर सूरीजी म.सा. साध्वीवर्या श्रीशील रेखाश्रीजी श्रीचारुधर्मा श्री जी, श्रीसम्यगदर्शना श्री जी साध्वीवर्या श्रीमुक्तिरेखा श्री जीआदि ठाणा के साथ श्री अभ्युदयपुरम् में चल रहे उपधान तप का मालारोपण 2 जून को होगी।उपधान तप का वरघोड़ा 1 जून को आयोजित होगा। मालारोपण विधान दिनांक 2 जून को सम्पन्न होगा। **आपका आगामी चार्तुमास श्री अर्बुजगिरी जैन श्वेतांबर उपाश्रय इन्दौर में होने की घोषणा की गई है चार्तुमासिक प्रवेश14 जुलाई को होगा ।**

खड़्की पूना में चार्तुमास

पूना- सागर समुदायवर्ती साध्वीवर्या श्री दिव्ययशा श्रीजी म. सा.आदि ठाणा-3 का चार्तुमास खड़्की पूना के श्री संभवनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर, खड़्की (पूना) महा. में होगा। जून के प्रथम सप्ताह में श्री गंगाधाम सोसायटी पूना में पूज्यपाद आचार्य भगवंत वाणी के जादूगर श्री जित रत्नसागरसूरीजी महाराज की अमृत निश्रा में खड़्की श्रीसंघ की विनंती पर चार्तुमास की जय बोलाई गई है। संघवी सायरबाई श्राविका उपाश्रय नया बाजार, बस स्टैंड के पास ,शांति ज्वेलर्स के उपर-खाड़्की (पूना) खड़्की-3 महा.

गणिवर्य का चार्तुमास राजकोट में

राजकोट- पूज्य बंधु बलेड़ी आचार्य भगवंत श्री हेमचन्द्रसागरसूरीजी के सुशिष्य गणिवर्य श्री तारकचंद्रसागरजी म.सा.,मुनिश्री अर्हमचन्द्रसागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास राजकोट जैन तपागच्छा संघ के द्वारा संचालित श्री मणियार संघ में होगा। श्री मणिभद्र आराधना भवन में चार्तुमास प्रवेश दिनांक 7 जुलाई को होगा।

श्री सरस्वतीपुत्र का प्रवेश 7 जुलाई को धुलिया में

धुलिया- 420 पुस्तकों के रचियता पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री रत्नसुन्दर सूरीजी महाराजा का चार्तुमास प्रवेश श्री शीतलनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर धुलिया (महा.) में दिनांक 7 जुलाई को होगा।

मुनिश्री उदयरत्नसागरजी का प्रवेश 19 जुलाई को

पालीताना- पूज्यपाद युवा हृदय सम्राट आचार्य देवेश श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. के सुशिष्य मुनिश्री उदय रत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा के साथ पूज्य साध्वीश्री मुक्तिप्रिया श्रीजी आदि ठाणा का चार्तुमास श्री नवरत्नधाम तलेटी रोड़, पालीताना (भावनगर) (गुज.) में होने जा रहा है। आपका प्रवेश 19 जुलाई को होगा।

सूरत में चार्तुमास

वेसू सूरत- श्री ऊंकार सूरि आराधना भवन, महाराणा प्रताप रोड़, वीआईपी रोड़के पास, हाईटेक रेसीडेंसी के सामने, वेसु, सूरत-395007 (गुज.) में सागर समुदाय के पूज्यपाद बंधु बेलड़ी पू.आ. हेमचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा., पू.आ.श्री विराग चन्द्रसागर सूरीजी म.सा., पू. गणि श्री आनंदचन्द्रसागरजी म.सा. तथा पूज्य साध्वी श्री संयमिताश्रीजी म.सा. आदि विशाल श्रमण-श्रमणी वृंद का प्रवेश 14 जुलाई को होने जा रहा है।

बोलिया में चार्तुमास

बोलिया- पूज्य आचार्य भगवंत श्री पद्मभूषण सूरीश्वरजी महाराज, पंन्यास प्रवर श्री ऋषभरत्नविजयजी म. सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ बोलिया (मंदसौर) (म.प्र.) में होने जा रहा है। प्रवेश 15 जुलाई को होगा।

संयम लेकर संयम मुनिश्री सिद्धर्षिचंद सागर बन श्रमण परम्परा को आगे बढ़ायेंगे

✱ गणि श्रीपद्मचंद्रसागरजी म.सा. का शिष्यत्व पाया

रतलाम-अब मुनिश्री सिद्धर्षिचंद सागर के रुप में मुमुक्षु श्री संयम पालरेचा संयम जीवन ग्रहण कर बंधु बेलड़ी आचार्य भगवंत के गुरुकुल में सम्मिलित होकर परमात्मा प्रभुवीर के शासन को आगे बढ़ायेंगे। आपका प्रज्या महोत्सव विगत 12 जून को ऐतिहासिक संयम महोत्सव के साथ हुआ रतलाम में हुई। पूज्य आचार्यश्री प्रसन्नचंद्रसागरसूरीजी आदि ठाणा के साथ बड़ी संख्या में साधु-साध्वी का आगमन रतलाम दीक्षा में हुआ दीक्षा के बाद उनके मुनि जीवन के लिये नाम की घोषणा संसारी मिला के द्वारा दी गई। दीक्षा के बाद जब नूतन मुनि प्रथम बार पगलिया के लिये संसारी घर आये तो मार्ग में वंदन करनेवाले लाईन लगाकर खड़े थे। उनका श्वान जिसको उन्होंने जीवन दान दिया था वह भी मुनिवेश में देखकर आश्चर्य की मुद्रा में आ गया था।

श्री अभयसूरीजी म.सा. का अमृत महोत्सव मनाया गया

मंदसौर- बही पार्श्वनाथ (मंदसौर) 7 जून को यहां श्री अभय अमृत उत्सव समारोह का आयोजन हुआ। धर्मप्रेमी बाहर से भाग लेने आये। पूरे सकल जैन समाज तथा ग्राम का प्रतिभोज का आयोजन किया गया।

यह समारोह तपागच्छ कार्यवाहक गच्छाधिपति जैनाचार्य श्री अभयदेव सूरीश्वरजी म.सा. के जीवन के 75 वर्ष पूर्णता के निमित्त आयोजित हुआ था। इसे सफल बनाने में आचार्य श्रीमद् विजय मोक्षरत्न सूरीश्वरजी म.आदि का सहयोग रहा। इस उपलक्ष्य में श्री विमल सुदर्शन चंद्र परमार्थिक जैन ट्रस्ट उदयपुर-वही एवं श्री अभय अमृत वर्ष महोत्सव समिति द्वारा द्वि दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। 6 जून को श्री शांतिधारा अभिषेक तथा महाआरती एवं संगीत संध्या हुई। 7 जून को श्री अभिनव सम्मेत शिखर तीर्थ तख्ती का अनावरण, श्री प्रकाशचंद्र रसीकलाल धारीवाल के हाथों से तथा ध्वज अमृत महोत्सव का समापन समारोह आयोजित हुआ। श्री बाबुलाल मिश्रीलाल भंसाली का सम्मान एवं महामांगलिक हुई। श्री सकल जैन समाज का श्री संघ स्वामी वात्सल्य तथा पूरे ग्राम का भोजन हुआ। इस अवसर पर जैन समाज के कई अग्रणीय उद्योगपति, कई राज्यों के मंत्रीगण का आगमन हुआ था। **आपश्री का चातुमार्सिक प्रवेश आषाढ़ सुदी-8 रविवार दिनांक 14 जुलाई को श्री मंडार जैन श्वेतांबर श्री संघ पोस्ट मंडार तहसील रेवदर जिला सिरोही मंडार (राज.) में होगा।**

डूंगरपुर में चार्तुमास

डूंगरपुर- पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण गुरुदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य वागड़ विभूषण आचार्य देवेश श्री मृदुरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य 150 ओली के आराधक पूज्य मुनिराज श्री मुनिरत्नसागरजी म.सा. एवं मुनिश्री पवित्ररत्नसागरजी म.सा.आदि ठाणा-2 का मंगलमय चार्तुमास श्री गंभीर पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर, वीसा पोरवाल श्रीसंघ डूंगरपुर (राज.) में होगा।

तलेगांव में बाल मुमुक्षु मार्मिक दीक्षित होंगे

तलेगांव- श्री पार्श्व प्रज्ञालय तीर्थ तलेगांव में बाल मुमुक्षु श्री मार्मिक परमात्मा श्री महावीरस्वामी प्रभु के श्रमण पंथ को स्वीकार किया है। पूज्य आचार्यदेव श्री मतिचंद्रसागर सूरीजी म.सा., मुनिराज श्री हीरसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यह प्रवज्या महोत्सव दिनांक 12 जून को सम्पन्न हुआ।

बीकानेर में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव

बीकानेर- यहां श्री गंगेश्वर पार्श्व नाथ जिन मंदिर में जिनेन्द्र भक्ति पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन में हुई। पूज्य आचार्य श्री जिनपीयूषसागर सूरीजी महाराज आदि ठाणा-18 की निश्रा रही। दिनांक 20 जून से 1 जुलाई के मध्य यह आयोजन सम्पन्न हुआ। दिनांक 27 जून से पंच कल्याणक हुए, दिनांक 29 जून को दीक्षा कल्याणक की रथयात्रा तथा 30 जून को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

पूज्यपाद गच्छाधिपति ऑपरेशन के बाद पूर्ण रुप से स्वस्थ्य है

* चार्तुमास प्रवेश 7 जुलाई को वालकेश्वर में होगा।

मुंबई- मुंबई- सागर समुदाय के सिरताज पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजाको हर्निया की तकलीफ के बाद मुंबई के सैफी हॉस्पिटल में आपका ऑपरेशन सफलता पूर्वक हुआ। अब आपका स्वास्थ्य अच्छा है। आपश्री के साथ उपाध्याय श्री विनीतसागरजी म.सा., मुनिराज श्री देवप्रभसागरजी म.सा., वर्धमान तपोनिष्ठ मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. एवं मुनिश्री विनम्रसागर जी म.सा. आदि साधु-साध्वी मंडल है। आपश्री का आगामी चार्तुमास मुंबई वालकेश्वर के श्री प्रजेन्ट पैलेस जैन श्री संघ में होने जा रहा है। पूज्यपादश्री का चातुमार्सिक प्रवेश 7 जुलाई को होगा। पूज्यश्री की निश्रा में 3 मई को सजोड़े श्री कीर्तिभाई और जयश्री बहन की भगवती प्रवज्या सम्पन्न हुई। दीक्षा 52 जिनालय भायंदर में हुई।

पूज्य आचार्यश्री मतिचंद्र सागरसूरीजी का चार्तुमास

मुंबई- गिरगांव चौपाटी पर स्थित श्री काबुलनाथ जैन श्री संघ में पूज्य आचार्य देवेश श्री मतिचंद्रसागर सूरीजी म.सा. एवं मुनिश्री श्रुतचंद्र सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास होने जा रहा है। श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ जिन मंदिर में चार्तुमास हेतु प्रवेश दिनांक 11 जुलाई को होगा।

पालीताना में वीर सौभाग्य उपधान तप

पालीताना- पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री अभयदेव सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवेश श्री विजयरत्नचंद्र सूरजी महाराजा डहेलवाला, पूज्य आचार्य श्री विजय उदयरत्न सूरीजी महाराज आदि ठाणा की अमृत निश्रा में वीर सौभाग्य उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप का प्रथम मुर्हूत दिनांक 21 नवंबर को एवं दूसरा मुर्हूत 23 नवंबर को रहेगा। दिनांक 9 दिसंबर को तपस्वियों की शोभायात्रा तथा दिनांक 10 जनवरी 2025 को उपधान तप की माल होगी। संघवी वीरा बहन सौभाग्यचंद्र अंगारा परिवार लाभार्थी है।

श्री शीतलनाथ संघ में चार्तुमास

इन्दौर- श्री शीतलनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर ट्रस्ट के अंतर्गत 746 द्वारकापुरी-सुदामानगर, इन्दौर (म.प्र.) सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री मुक्ति रेखाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास होने जा रहा है।

साध्वीवर्या हेमेन्द्रश्रीजी का चार्तुमास मंदसौर में

उज्जैन- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री हेमेन्द्रश्रीजी म.सा., साध्वी श्री चारुदर्शाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास नई आबादी मंदसौर में होगा।

इन्दौर में चार्तुमास

इन्दौर-सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री पद्मलता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री मंत्रेश्वर चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर अशोकनगर, एयरपोर्ट रोड़, इन्दौर (म.प्र.) में होने जा रहा है। चार्तुमास प्रवेश दिनांक 7 जुलाई को होगा।

पूज्य गच्छाधिपति का स्वास्थ्य सुधार पर है

पूज्य आचार्य भगवंत श्री विजय केसर सूरीश्वरजी महाराज साहब के समुदाय के गच्छाधिपति पू. आ.भगवंत श्री विजय विज्ञानप्रभ सूरीश्वरजी महाराज साहब और दो सहवर्ती श्रमण भगवंतों का आज 9 जून प्रातः कुर्नूल हैदराबाद राजमार्ग पर कुर्नूल से करीब 60 किलोमीटर दूर ट्रक से एक्सीडेंट हुआ है। ड्राईवर ट्रक छोड़कर भाग गया। पूज्य आचार्य भगवंत एवं मुनिवर को कुर्नूल की हॉस्पिटल में एडमिट किया गया है। दोनों का सिटीस्केन हुआ है। डॉक्टर की पूरी टीम देख रही है। आचार्य भगवंत का स्वास्थ्य अब ठीक है। सहवर्ती मुनिवर कर स्वास्थ्य भी ठीक ह।

दुर्भाग्य से पूज्य पंन्यास प्रवर श्री पुनितप्रभविजयजी महाराज साहब का इस एक्सीडेंट में स्वर्गवास हो गया है। दुःख की बात है कि सहवर्ती एक दीक्षार्थी का भी स्वर्गवास हो गया है। एक वीलचेयर वाले युवक की भी मृत्यु हो गई है। उसका अग्नि संस्कार कुर्नूल संघ में सम्पन्न हुंआ। पंन्यास प्रवर श्री पुनितप्रभविजयजी महाराज सा. का पार्थिव शरीर कुर्नूल लाकर अग्नि संस्कार किया गया।

केशरवाड़ी में चार्तुमास उपधान तप होगा

चैन्नई- शत्रुंजय अवतार स्वरुप श्री केशरवाड़ी तीर्थ में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री विजय उदयप्रभ सूरीश्वरजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में भव्य चार्तुमास और उपधान तप का आयोजन होगा। पूज्यश्री का चार्तुमास प्रवेश दिनांक 14 जुलाई को होगा। 20 जुलाई से चार्तुमास आरंभ होने जा रहा है। महापर्व पर्युषण दिनांक 31 अगस्त से आरंभ होंगे। उपधान तप की आराधना दिनांक 20 अक्टूबर से होगी तथा मोक्षमाल 8 दिसंबर को होगी। चार्तुमास स्थल-श्री आदिनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर, 37/41 गांधी रोड़, PUZHAL-CHENNAI-66 (T.N.) है।

साध्वीश्री अमितगुणा श्रीजी का चार्तुमास उज्जैन में

उज्जैन- पूज्य साध्वीवर्या मातृ हृदया श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री ऋषभदेवजी छगनीरामजी की पेढ़ी उज्जैन में होगा। विगत दिनों श्री संघ उज्जैन की विनंती पर बड़नगर में चार्तुमास की घोषणा हुई है। प्रवेश दिनांक 15 जुलाई को होगा।

साध्वीश्री सौम्यवंदना श्रीजी का चार्तुमास रिंगनोद में

उज्जैन- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या सौम्यवंदना श्रीजी, श्री निर्मिताश्रीजी, श्री राजिताश्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास रिंगनोद में निश्चित हुआ है।

चार्तुमास चार्तुमास....

✻ श्री वल्लभ समुदाय की साध्वी वर्या श्री सौम्यप्रभाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, आत्मवल्लभ आराधना भवन केकड़ी (कोटा) (राज.) में होने जा रहा है। प्रवेश दिनांक 7 जुलाई को होगा।

✻ सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री अक्षयज्योति श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, मुकुन्दानगर, पूना (महा.) में होने जा रहा है। प्रवेश 16 जुलाई को होगा।

✻ सागर समुदाय के मुनिराजश्री जयचंद्रसागरजी म.सा. का चार्तुमास कोठारी जैन उपाश्रय, बड़ा बाजार, वलसाड़ (गुज.) में होने जा रहा है। प्रवेश 7 जुलाई को है।

पाली में चार्तुमास

पाली- सागर समुदायवर्तीय पूज्य जैनाचार्य श्री नयचंद्रसागरसूरीजी म.सा. के सुशिष्य मुनिश्री सुमलियो सागरजी म.सा. एवं मुनिश्री शीतलचंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा-2 का चार्तुमास सेठ नवलचंद्र सुप्रलचंद्र जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक (तपागच्छ) देव की पेढ़ी के अंतर्गत बड़ा उपाश्रय, हाथी-घोड़ा पाली (राज.) में हो रहा है।

✻ साध्वीवर्या श्री नयप्रज्ञा श्रीजी का चार्तुमास बड़ा उपाश्रय, हाथी-घोड़ा पाली (राज.) में हो रहा है।

✻ साध्वीवर्या श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी आदि ठाणा-2 का चार्तुमास समेरियो की घाटी, पाली (राज.) में हो रहा है।

✻ साध्वी श्री शीलव्रता श्रीजी आदि ठाणा-3 का चार्तुमास महावीर नगर, पाली (राज.) में हो रहा है।

✻ साध्वीवर्या श्री चिंतनदर्शिता आदि ठाणा-2 का चार्तुमास पुराना हाउसिंग बोर्ड, पाली (राज.) में हो रहा है।

गिरनार में चार्तुमास

गिरनार- पूज्य अध्यात्मयोगी श्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य पूज्य आचार्य भगवंत श्री पूर्ण चन्द्रसूरीश्वरजी महाराज आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद का आगामी सामूहिक चार्तुमास श्री गिरनार महातीर्थ में होने जा रहा है। सामूहिक रुप से 500 आराधक का चार्तुमास 50 दिवस का होगा।

आगामी चार्तुमास

औरंगाबाद- यहां चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य मुनिश्री हंसबोधि विजय जी म.सा. का तथा तपस्वी श्री भद्र कीर्तिविजयजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास अहमदाबाद के शांतिनगर जैन संघ उस्मानपुरा में घोषित हुआ है। पूज्य पंन्यास श्री मनोभूषणविजयजी म.सा. का चार्तुमास भी यहीं होगा।

राजगढ़ में चार्तुमास होगा

राजगढ़- जिनागमसेवी पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देव श्री दौलत सागरसूरीजी महाराज साहब की आज्ञावृत्ति पूज्य साध्वी श्री हेमेन्द्र श्रीजी महाराज की शिष्या पूज्यश्री चारुव्रता श्रीजी महाराज की शिष्या पूज्य नम्रवृता श्रीजी महाराज श्री मग्नवृता श्रीजी महाराज मीतवृता श्रीजी महाराज आदि ठाणा-3 का आगामी चार्तुमास राजगढ़ निर्धारित हुआ है।

आचार्य श्री महासेन सूरीजी का चार्तमास

प.पू. कविकुलकीरिट आ.श्री लब्धि सूरीजी म. के दिव्य साम्राज्य पू. शंखेश्वर प्रेमी आ. महासेनसूरीजीआदि साध्वी विरतिपूर्णाश्री आदि ठाण का वि.सं. 2080 का चार्तुमास बैंगलोर-जयनगर संघ में जय बुलाई गई।

जम्बुद्वीप के मार्गदर्शक जैनाचार्य श्री अशोक सागर सूरीजी का चार्तुमास पालीताना में

✻ 99 यात्रा का आयोजन होगा।

अहमदाबाद- अहमदाबाद-81 वर्ष की आयुष्य 63 वर्ष की संयम साधना 27 वर्ष से नवकार महामंत्र के तीसरे पद पर विराजित 126 से अधिक शिष्य-प्रशिष्य संयमी आत्मन् की सम्पत्ति के मालिक108 फीट श्री आदिनाथ दादा की प्रतिमा के स्वप्न दृष्टा, जम्बुद्वीप के मार्गदर्शक सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य श्री अशोक सागर सूरीजी महाराजा का सारस्वत संयम सत्कार महोत्सव 22 मई को मनाया गया था। इस प्रसंग पर पूज्य आचार्यदेव श्री जिनचंद्रसागरसूरीजी, श्री पूर्णचन्द्र सागर सूरीजी, श्री सौम्य चंद्र सागर सूरीजी आदि विशाल संख्या में साधु साध्वीवृंद की अमृत निश्रा रही आपश्री कर चार्तमास पालीताना जम्बुदीप में हाने जा रहा है आपकी निश्रा में 99 यात्रा का आयोजन पालीताना में दिनांक 18 नवंबर से आरम्भ होगा। 99 यात्रा की पूर्णाहुति 6 जनवरी 2025 को होगी। पूज्यपाद आचार्यदेव श्री सागरचंद्रसागरसूरीजी महाराज का सानिध्य भी रहेगा। साध्वीवर्या श्री विहितमाला श्रीजी म.सा. की मुख्य प्रेरणा है। आयोजन जंबुद्वीप से संचालित होगा। आयोजक संघवी शिल्पा बहन दिनेशचंद्र आदि वडेया परिवार है।

हुगली में आनंदाभ्युदय चार्तुमास हेतु युगलबंधु जैनाचार्य का प्रवेश 16 जुलाई को

गौतमपुरा- जैनाचार्य वाणी के जादूगर पूज्य पाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागरसूरीजी महाराज आयंबिल तप की 270 वीं ओलीजी आराधक जैनाचार्यश्री चन्द्र रत्न सागर सूरीजी म.सा. मुनिश्रीचैत्यरत्न सागर जी मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनिश्री पवित्ररत्नसागरजी म.सा. मुनि श्री गोयम सागरजी म.सा.आदि ठाणा का विहार मार्ग में आनेवाले अनेक श्री संघों नगर में शासन प्रभावना करते हुए कर्नाटक के नगर हुगली की ओर विहार चल रहा है। **हुगली के मरुधार श्रीसंघ आपश्री का चार्तुमास में होने जा रहा है।**

गंगेश्वर जिनालय में अंजन प्रतिष्ठा

बीकानेर- श्री गंगेश्वर (पार्श्वनाथ) जैन श्वेतांबर मंदिर में अंजन प्रतिष्ठा का आयोजन पूज्य आचार्य श्री जिन पीयूषसागरसूरीजी महाराज की निश्रा में हुआ। दिनांक 27 जून से महोत्सव आरंभ हुआ। भव्य वरघोड़े का आयोजन 29 जून को हुआ। प्रतिष्ठा 30 जून को सम्पन्न हुई। सम्पूर्ण आयोजन अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमार बाबू मल हरण के मार्गदर्शन और प्रेरणा से हुआ।

नूतन आचार्यश्री का चार्तुमास पूना में

पूना-पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य नूतन आचार्य देवेश वैराग्यरत्नसागर सूरीश्वर जी महाराज का 2024 का चार्तुमास पूना में होने जा रहा है। आपका चार्तुमास सोमवार पेठ पूना में निश्चित हुआ है। आप अभी मुंबई में विराजमान है।

आ.श्री हंसरत्न विजय सूरीजी का चार्तुमास जोधपुर में

जोधपुर- जैन जगत में अनेक बड़ी तपस्या करनेवाले आचार्य भगवंत श्री हंसरत्न सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास जोधपुर में होने जा रहा है। दिनांक 17 मार्च को मुंबई के कांदिवली श्री संघ में जोधपुर से बड़ी संख्या में श्री संघ के श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में जोधपुर चार्तुमास की जय बुलाई गई। जून माह में पूज्यश्री जोधपुर पधारेंगे इसके साथ ही जैन संत श्री विश्वरत्नविजयजी के साथ अनेक संत श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक रत्नप्रभ भवन में चार्तुमास करेंगे।

पालीताना में चार्तुमास

पालीताना- सनतर भवन पालीताना में 2024 का चार्तुमास होने जा रहा है। पूज्य आचार्यश्री आनंद वर्धना सूरीजी एवं श्री आत्मदर्शन सूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में चार्तुमास दिनांक 20 जुलाई से आरंभ होगा तथा समापन 8 सितंबर को होगा।

प्रतिष्ठाचार्य श्री जिनोत्तम सूरीजी म.सा. का चातुर्मास

आपका आगामी चार्तुमास श्री शिवगंज राज. के जैन श्वेतांबर उपाश्रय में होने की घोषणा हुई है।

चार्तुमास.... चार्तुमास....!

✻ प.पू. गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद् विजय लेखेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती (बेन म.सा.) साध्वीजी श्री अनंतगुणा श्रीजी म.एवं आदि ठाणा-4 का चार्तुमास रतलाम में होने जा रहा है।

✻ पूज्य आचार्यदेव श्री विजय जयरत्न सूरीश्वरजी महाराज आदि ठाणा का चार्तुमास श्री महावीर जैन श्वेतांबर पेढ़ी ट्रस्ट, भाण्डवपुर (जालोर) -343022 (राज.) में होगा।

✻ सेठ श्री धर्मचंद पेढ़ी जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ सावड़ी में पूज्य पंन्यास प्रवर श्री प्रशांतशेखरविजयजी आदि ठाणा का चार्तुमास सादड़ी नगर में होने जा रहा है।

✻ पूज्य आचार्यदेव श्री रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 17 जुलाई को श्री जैन पोसली पार्श्वनाथ श्वेतांबर ट्रस्ट, श्री पोसालिया जैन संघ पोसालिया जिला सिरोही-307028 (राज.)

✻ गौतमपुरा- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री पद्मलता श्रीजी म.सा., श्री पूर्णलताश्रीजी म.सा., तत्वरुचि श्रीजी म.सा., श्री दौलतलता श्रीजी म.सा., श्री आज्ञारुचि श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-5 का चार्तुमास इन्दौर एरोड्रम रोड़, स्थित अशोकनगर श्री संघ में घोषित हुआ।

✻ गुरुकृपापात्र गच्छाधिपति प.पू. आचार्य श्री विजय विज्ञानप्रभ सूरीजी महाराजा आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश श्री आदिनाथ जैन श्वेतांबर टेम्पल ट्रस्ट,जैन टेम्पल ट्रस्ट चिकपेट क्रॉस, बैंगलोर-560053 (कर्नाटक) में होग।

✻ परमात्म भक्तिरसिक प.पू.आचार्य श्री विजय राजचंद्र सूरीजी महाराजा आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश भुवनरत्न साधना सदन, शांतबा आयंबिल शाला के पीछे, तलेटीरोड़, पालीताना जिला भावनगर पालीताना-364270 (गुज.) में होगा।

✻ बंधुबेलड़ी योगसाधना पथिक प.पू. पंन्यास प्रवर श्री पुनिताप्रभ विजय जी गणीवर्य म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री मुनिसुव्रतस्वामी श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ कुरुंकुपेट विद्यासागर ओसवाल गार्डन, चैन्नई-600021 (त.ना.) में होगा।

✻ वर्धमान तपोनिधि, नूतन प्रवर्तक प.पू. मुनिराज श्री बोधिप्रभ विजयजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री अजितनाथ श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ, एम.बी.टी. स्ट्रीट नगरपेट क्रॉस, बैंगलोर-560002 (कर्नाटक) में होगा।

✻ स्वाध्याय रसिक प.पू.मुनिराज श्री प्रियंकरप्रभविजयजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश श्री वासुपूज्य स्वामी श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ, यादवा कॉलेजरोड़,, माधवनगर, बैंगलोर-560001 (कर्नाटक) में होगा।

✻ सौम्य स्वभावी प.पू. मुनिराज श्री सौम्यप्रभविजयजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ 984, दुसरा मैन, 4 था ब्लॉक, राजाजी नगर, बैंगलोर-560010 (कर्नाटक) में होगा।

✻ भक्तिरसिक प.पू.मुनिराज श्री जयंकरप्रभविजयजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री शांतिवल्लभ टी. वी. एच. लुंबिनी जैन संघ, फ्लेट नंबर 4013, मोक्ष मार्ग, टी.वी.एच. लुंबिनी स्केवर, 127-ए, बिकलींन रोड़, चैन्नई-600007 (त.ना.) में होगा।

खरतर गच्छ चार्तुमास....!

✻ पूज्य गच्छाधिपति युग दिवाकर आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी मा.सा. का चार्तुमास प्रवेश कुशल-कान्ति संघ, सूरत (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री जिनमनोज्ञ सूरीजी म.सा का चार्तुमास प्रवेश अशोक नगर भिवंडी (महा.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री जिनपूर्णानंद सागरसूरीजी म.सा का चार्तुमास प्रवेश मोती डूंगरी दादावाड़ी, जयपुर (राज.) में होगा।

✻ पूज्य स्थविरश्री मुक्तिप्रभ सागरजी म.सा., गणि श्री मनीषप्रभ सागरजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश पुरुष-वाक्कम, चैन्नई (त.ना.) में होगा।

✻ पूज्य गणि श्री मयंकप्रभ-मेहुल प्रभसागरजी म. का चार्तुमास प्रवेश नंदुरबार (महा.) में होगा।

✻ पूज्य मुनि श्री मलयप्रभ सागरजी म. का चार्तुमास प्रवेश बैंगलोर (कर्नाटक) में होगा।

✻ पूज्या महत्तरा श्री दिव्यप्रभा श्रीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश पालीताना (गुज.) में होगा।

✻ पूज्या प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभा श्रीजी म. के पूज्या प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभा श्रीजी म. के पूज्या साध्वी श्री प्रियदर्शना श्रीजी म.का चार्तुमास पालीताना (गुज.) में होगा।

✻ पूज्या साध्वी श्री सौम्यगुणा श्रीजी म. का चार्तुमास मालेगांव (महा.) में होगा।

✻ पूज्या साध्वी श्री शुभदर्शना श्रीजी म. का चार्तुमास प्रवेश खापर (महा.) में होगा।

✻ पूज्या साध्वी श्री संयम ज्योति श्रीजी म. का चार्तुमास उदयपुर (राज.) में होगा।

✻ पूज्या साध्वी श्री श्रुतदर्शना श्रीजी म.का चार्तुमास नाकोड़ा तीर्थ (राज.) में होगा।

✻ पूज्या साध्वी श्री श्रद्धान्विना श्रीजी म.सा. का चार्तुमास जगदलपुर (छ.ग.) में होगा।

राष्ट्रसंत का चार्तुमास श्री नाकोड़ा तीर्थ में

मुंबई- सागर समुदाय के वरिष्ठ संत जैनाचार्य श्री चन्द्राननसागर सूरीजी महाराजा के गुरुभक्तों का मिलन समारोह दिनांक 8 दिसंबर को चेम्बुर वेस्ट के श्री ऋषभदेव जैन मंदिर में आयोजित किया गया। श्री नाकोड़ा दर्शन परिवार ने आयोजित किया था। पूज्यश्री का आगामी चार्तुमास श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ महातीर्थ से निश्चित हुआ। आपश्री की निश्रा में मुंबई में चार प्रतिष्ठा महोत्सव होने के बाद आपश्री ने दिनांक 23 दिसंबर को राजस्थान की ओर विहार किया है। राजस्थान में आपश्री की निश्रा में पांच अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव होनेवाले है। मुंबई में आपश्री के वरद हस्ते 136 अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव हो चुके है।

आगामी चार्तुमास की जय बोलाई गई

मुंबई- यहां के विलेपार्ले श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ की आग्रहभरी विनंती पर पूज्य आचार्य देवेश श्री अक्षयबोधि सूरीजी तथा आचार्यदेव श्री महा बोधि सूरीजी महाराज का आगामी वि.सं. 2080 ईस्वी सन् 2024 का चार्तुमास विलेपार्ले श्री संघ में करेंगे। संघ में चार्तुमास की घोषणा से हर्ष छा गया।

जोधपुर में चार्तुमास

जोधपुर- श्री भेरुबाग पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर तीर्थ में पूज्य आचार्यदेव श्री तत्वदर्शन सूरीश्वरजी महाराज का आगामी चार्तुमास निश्चित हुआ है। आपश्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी म.सा. के प्रशिष्य है।

मनासा में चार्तुमास

मनासा- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री सौम्ययशा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ मनासा (मंदसौर) (म.प्र.) में होगा।

कलकत्ता में चार्तुमास

कलकत्ता- सिद्धांत महोदधि पू.सूरी ''प्रेम'' के तपः प्रभावक पट्ट धर रत्न एवं सिद्धांत संरक्षक पू. सूरी. ''राम'' के लघु गुरु बांघव वर्धमान तपोयुग प्रवर्तक रसनेंद्रीय विजेता तपस्वी सम्राट पू.आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय राजतिलक सूरीजी महाराजा के शिष्यरत्न पू.आचार्यदेव श्री हर्षतिलक सूरी म.सा., पू. गणिवर्य श्री दर्शनरक्षित विजयजी म.सा., पू. मुनिराज श्री योगतिलक विजयजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास भवानी पेठ श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ में होगा।

श्री गिरनार में चार्तुमास एवं उपधान तप

गिरनार- श्री गिरनार महातीर्थ में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जिनेशरत्न सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास गिरनार दर्शन धर्मशाला में होने जा रहा है। चार्तुमास प्रवेश आषाढ़ सुदी 13, दिनांक 19 जुलाई को होगा। चार्तुमास का आरंभ आषाढ़ सुदी-14, 20 जुलाई से होगा। महापर्व आराधना दिनांक 31 अगस्त से 7 सितंबर तक होगी। उपधान तप का प्रथम मुर्हूत दिनांक 13 अक्टूबर तथा द्वितीय प्रवेश 15 अक्टूबर को होगा। तपस्वियों की शोभायात्रा 29 नवंबर को तथा माल परिधान 30 नवंबर को होगा। आयोजक गांधी परिवार है।

झारड़ा में 17 साल बाद चार्तुमास

झारड़ा- झारड़ा में 23 वर्ष बाद प.पू.साध्वी अर्चिताश्रीजी और आनंदिताश्रीजी म.सा. का चार्तुमास गच्छाधिपति श्री नरदेवसूरीजी की आज्ञा से प.पू.आचार्य श्री जितरत्न सागरजी, चन्द्ररत्नसागरजी म.सा. ने झारड़ा श्रीसंघ की विनंती पर मोहन बड़ोदिया में दीक्षा महोत्सव में झारड़ा में प.पू.साध्वी अर्चिताश्रीजी और आनंदिताश्रीजी म.सा. का 2024 का चार्तुमास कराए जाने आज्ञा प्रदान की। झारड़ा जैन श्री संघ में खुशी की लहर दौड़ गई।

साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी का चार्तुमास

पाली- पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देव श्री नरदेवसूरीजी सूरीजी महाराज साहब की आज्ञावृत्ति सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या रही तपस्वी साध्वी कुसुम श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी म.सा. एवं बाल साध्वी श्री ध्वनिरत्ना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास पाली के गुजराती जैन आराधना भवन में होगा। चार्तुमासिक आराधना के अंतर्गत अनेक विविध तप, जप, अनुष्ठान महोत्सव के आयोजन की बड़ी श्रृंखला है।यहां पर पूज्य मुनिराज श्रीसुमतिचन्द्रसागर जी म.सा. का श्री चार्तुमास होने जा रहा है।

नागेश्वर में चार्तुमास

नागेश्वर- श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ में सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री मोक्षज्योतिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 का चार्तुमास निश्चित हुआ है।

प्रतिष्ठा व संघ स्थापना के बाद महाविदेह धाम में आध्यात्मिक ज्ञान शिविर सम्पन्न

सूरत- वेसु में दीक्षा दानेश्वरी संयम तीर्थ श्री महाविदेह धाम की ऐतिहासिक प्रतिष्ठा, संघ स्थापना के बाद महाविदेहधाम वरिष्ठ मार्गदर्शक आ.श्री रश्मिरत्नसूरीश्वरजी म.सा. आदि-51 गुरु भगवंतों की निश्रा में श्री महाविदेहधाम जैन श्वे. मूर्ति तपागच्छ संघ में गोल्डन जुबली आध्यात्मिक ज्ञान शिविर दिनांक 20 से 26 मई तक उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। शिविर में 170 बालक युवावर्ग जुड़े । जैन शासन के शासन वंदना, जैन योगध्यान सूत्ररहस्य, कर्मवाद, जैन तत्वज्ञान, जैनाचार, जैन मनोविज्ञान, विधि-विधान, मार्गानुसारी जीवन आदि विविध विषयों की जानकारी दी गई तर्क-दृष्टांत, सह सचोट ज्ञान, विविध गुरु भगवंतों के श्रीमुख से सुनकर सभी प्रसन्न हुए। गुण-रश्मि परिवार ने शिविर का सुन्दर आयोजन किया। शिविर के पूर्व 45 दीक्षाएं सम्पन्न हुई। सूरत में हर घर मासक्षमण की प्रेरणा के लिये पूज्य आचार्य भगवंत वन-डे प्रवचन श्रेणी चल रही है। समूह मासक्षमण, सामूहिक वर्धमान तप के पाए, दशहरा से उपधान तप की प्रेरणा की जा रही है। ✻ 7 जुलाई को कांदेर रोड़ जैन संघ में पूज्य आचार्य श्री रश्मिरत्न सूरीजी आदि-36 साधु भगवंत तथा प्रवर्त्तिनी सा. श्री पुण्यरेखा श्रीजी आदि 25 ठाणा का भव्य चार्तुमास प्रवेश होगा । ✻ 22 जुलाई से समूह मासक्षमण प्रारम्भ । ✻ 13 सितंबर से समूह वर्धमान तप पाया का प्रारंभ ।✻ 12 अक्टू. से गुरु भक्त परिवार द्वारा उपधान का प्रारंभ होगा। स्थान श्री राम पावन भूमि, संघ पालीताना व गिरनार का संघ निकलेगा।

आचार्यश्री विजय यशोभद्र सूरी महाराज ने देह त्याग कर जीवन पूर्ण किया

कुवाल- डहेलावाला समुदाय के आचार्य भगवंत श्री विजय यशोभद्र सूरीजी महाराजा का देवलोक गमन दिनांक 12 जून को प्रातःकाल 20.44 बजे श्री सुरेन्द्र सिद्धांत तीर्थ में हो गया। आपश्री 93 वर्ष की आयु और 79 वर्ष के संयम जीवन को धारण किया था। आपश्री अंतिम का संस्कार दिनांक 13 जून को हुआ । मालवा से विशेषकर उज्जैन से आपश्री का निकट संबंध रहा । आपका आगमन होने के साथ उज्जैन में चार्तुमास किया था । आगमोद्धारक परिवार की ओर से भावभरी आदरांजलि।

सोमवार पेठ में चार्तुमास

पूना- यहां के श्री राजस्थली जैन श्वेतांबर संघ 28 सोमवार पेठ-पूना - 411011 (महा.) में वर्धमान तपोनिष्ठ आचार्य भगवंत श्री वैराग्यरत्नसागर सूरीजी महाराज एवं मुनिश्री ऋषभरत्न सागरजी म.सा. के साथ साध्वी श्री दिव्यदर्शना श्रीजी और साध्वी श्री अक्षयरत्ना श्रीजी का चार्तुमास होने जा रहा है। आपका चार्तुमास प्रवेश 14 जुलाई को होगा।

जैनाचार्य श्री कुलबोधि सूरीजी का चार्तुमास

इन्दौर- पूज्य आचार्य देवेश श्री कुलबोधि सूरीश्वरजी महाराज आदि ठाणा का मंगलमय आगमन इन्दौर में शासन स्थापना दिवस वैशाख सुदी-11 दिनांक 19 मई को हुआ। आपश्री का सामैया का आयोजन होने के साथ त्रिदिवसीय प्रवचन श्रेणी दिनांक 20 से 22 मई तक ''हम कैसे भगवान बने'' विषय पर आयोजित हुई। आपश्री का चार्तुमासिक प्रवेश दिनांक 7 जुलाई को श्री नीलवर्णा पार्श्वनाथ श्वेतांबर मूर्तिपूजक ट्रस्ट, कंचनबाग, इन्दौर (म.प्र.) में होगा।

फलोदी में चार्तुमास

फलोदी- सागर समुदाय से पूज्यपाद आचार्य देवेश राष्ट्रसंत श्री चन्द्राननसागरसूरीजी महाराजा के शिष्यरत्न प्रवचनकार मुनि श्री निपुणचंद्र सागरजी म.सा. एवं मुनिश्री अर्हमचंद्र सागरजी म.सा. का भव्य चार्तुमास श्री जैन तपागच्छ संस्थान तपागच्छ धर्मशाला, आराधना भवन फलोदी - 342301(राज.) में होने जा रहा है। प्रवेश दिनांक 14 जुलाई को होगा।

56 वीं पुण्यतिथि पर गुणानुवाद सभा

सूरत- श्री प्रेम भुवनभानु सूरी गुरु भक्त परिवार के द्वारा आचार्यदेव श्री प्रेम सूरीश्वरजी महाराज की 56 वीं पुण्यतिथि सूरत के अनेक श्री संघ में दिनांक 2 जून को मनाई गई। पूज्य आचार्यदेव श्री फुलचंद्र सूरीजी, श्री रविरत्न सूरीजी एवं श्री रश्मिरत्न सूरीजी महाराज आदि ठाणा के आर्शीवाद से यह आयोजन सम्पन्न हुआ।

आचार्यश्री पूर्णचन्द्रसूरीजी की निश्रा में गिरनार नव्वांणु यात्रा का आयोजन

गिरनार- श्री कलापूर्ण समुदाय वर्तीय पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री पूर्ण चन्द्र सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में पूज्य मुनिश्री प्रशमलब्धि विजयजी म.सा. की प्रेरणा से गिरनार नव्वांणु यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। नव्वांणु यात्रा का शुभारंभ दिनांक 11 नवंबर को होगा एवं यात्रा की पूर्णाहुति दिनांक 25 दिसंबर को होगी। यात्रा का आयोजन श्री नेमि जिन श्वेतांबर जैन धर्मशाला से होगा। इसके पूर्व पूज्यश्री की निश्रा में वंथली से गिरनार का छःरि पालित यात्रा आयोजित होगी।

श्री चारुधर्मा श्रीजी का चातुर्मास उज्जैन में

उज्जैन- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री चारुधर्मा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ चौमुखी जैन मंदिर, इन्दौर रोड़, सुभाषनगर, उज्जैन में होने जा रहा है।

सिणधरी जिनालय का शताब्दी महोत्सव

सिणधरी- सागर समुदाय के राष्ट्र संत आचार्य देवेश श्री चन्द्राननसागर सूरीजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में सिणधरी के जिन मंदिर का शताब्दी महोत्सव मनाया गया। दिनांक 5 जून को पूज्यश्री के प्रवेश के साथ जिन मंदिर की 10 वर्षगांठ पर ध्वजारोहण भी हुआ। पूज्यश्री का चातुर्मास श्री नाकोड़ा महातीर्थ में होने जा रहा है। प्रवेश दिनांक 19 जुलाई को होगा।

सूरत में सहस्त्र अवधान वधावणा

सूरत- वेसू में स्थित श्री आगमोद्धारक धानेरा आराधना भवन में पूज्य आचार्यदेव श्री सागरचंद्रसागर सूरीजी महाराज एवं आचार्यदेव श्री नयचंद्रसागर सूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में कुछ समय पूर्व श्री मुंबई में 1000 अवधान प्रस्तुत करने वाले सरस्वती पुत्र मुनिश्री अजीतचंद्र सागरजी म.सा. के सूरत पधारने पर अवधान साधना वधावणा महोत्सव का आयोजन दिनांक 29 मई को किया गया। पूज्यश्री ने बच्चों को स्मरण शक्ति बढ़ाने की जानकारी भी दी।

श्री रामु पाटीदार नहीं रहे

मुंदेड़ी- श्री मुनि मुनिरत्नसागरजी म.सा. के संसारी गांव के श्री रामु पाटीदार का देहावसान दिनांक 25 मई को हुआ। श्री रामु गांव में स्थित जिन मंदिर में नियमित आकर साफ-सफाई करते थे। पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा के सम्पर्क में आने के बाद उनका जीवन परिवर्तित हुआ था। प्रतिदिन आराधना भवन में आकर प्रभु भक्ति करते थे। पक्षियों के लिये अनाज-पानी की व्यवस्था स्वयं के व्यय से गांव में आनेवाले सभी साधु-साध्वीजी की वैयावच्च करते थे। उन्हें लाना-छोड़ना सब कार्य करते थे। गुरुदेव के समय चातुर्मास प्रवेश, महामांगलिक में उनकी उपस्थिति रहती थी। सादर श्रद्धांजलि।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी जिनालय की प्रतिष्ठा

मनग्राम-पश्चिम बंगाल के शंखेश्वरपुरम् तीर्थ के सचिव मनग्राम में श्री चन्द्रप्रभस्वामी जिन मंदिर का प्रतिष्ठा महोत्सव 5 जुलाई से आरंभ होकर प्रतिष्ठा दिनांक 7 जुलाई को होगी। पूज्य आचार्यश्री मुक्तिप्रभ सूरीश्वरजी एवं श्री किनोतप्रभ सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में यह आयोजन होगा। श्री शंखेश्वरपुरम् पार्श्वनाथ जैन तीर्थ शंखेश्वरपुरम् पोस्ट सांकड़ा पुरुलिया बराकर रोड़, थाना पाड़ा जिला पुरुलिया-723155 (पश्चिम बंगाल) में आचार्यश्री का चातुर्मास होने जा रहा है। प्रवेश दिनांक 23 जुलाई का है।

दिल्ली मंडार संघ में चातुर्मास

दिल्ली-पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराज के गुरुकुल को चमकानेवाले पूज्य मुनिप्रवर श्री विशुद्धसागरजी म.सा. एवं मुनिश्री समकितरत्नसागरजी म.सा. का चातुर्मास श्री मंडार जैन संघ आराधना भवन एफ-223, मानव सरोवर गार्डन नईदिल्ली-110015 श्री सुमतिनाथ जैन मंदिर एफ-31 शॉपिंग सेन्टर, दिल्ली में होने जा रहा है। चातुर्मास प्रवेश दिनांक 12 जुलाई को होगा।

श्री गिरनार में चातुर्मास

गिरनार- प.पू.आ.श्री कलापूर्ण सूरीजी महाराजा समुदाय के आचार्य भगवंत श्री पूर्णचंद्रसूरीजी महाराजा आदि श्रमण-श्रमणी का भव्य चातुर्मास होने जा रहा है। पूज्यश्री का चातुर्मास प्रवेश दिनांक 18 जुलाई 2024 है। चातुर्मास कांताबा जैन धर्मशाला गिरनार (जुनागढ) (गुज.) में होगा।

हमारे तीज-त्यौहार

1- आषाढ़ वदी-12	बुधवार	3-7-2024	रोहिणी
2- आषाढ़ सुदी-5	गुरुवार	11-7-2024	श्री महावीरस्वामी च्यवन कल्याणक
3- आषाढ़ सुदी-6	शुक्रवार	12-7-2024	पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री देवेन्द्रसागर सूरीजी का स्मृति दिन विक्रम संवत् 1943
4- आषाढ़ सुदी-7	शनिवार	13-7-2024	चौमासी अट्ठाई आरंभ
5- आषाढ़ सुदी-14	शनिवार	20-7-2024	चौमासी चवदस साधु-साध्वी विहार बंद श्री शत्रुंजय यात्रा बंद
6- श्रावण वदी-5	गुरुवार	25-7-2024	डेढ़ महिने का घर
7- श्रावण वदी-11	बुधवार	31-7-2024	रोहिणी

पुष्य नक्षत्र :- **आरम्भः-**आषाढ़ सुदी-1 शनिवार दिनांक 6-7-2024, समय- 28.49 बजे से
समाप्तः- आषाढ़ सुदी-2 रविवार दिनांक 7-7-2024, समय- 30.03 बजे तक

पंचक :- **आरम्भः-**श्रावण वदी-2 मंगलवार दिनांक 23-7-2024 समय-09.21 बजे से
समाप्तः-श्रावण वदी-7 शनिवार दिनांक 27-7-2024 समय-13.00 बजे तक

धर्म में स्थित कौन ?

जह मम न पियं दुक्खं जाणिय एमेव सयलजीवाणं ।
न हणइ न हणावेई य धम्मंमि ठिओ स विन्नेओ ॥

- श्री पुष्पमाला प्रकरण

जैसे मुझे दुःख प्रिय नहीं, वैसे किसी भी जीव को दुःख प्रिय नहीं, ऐसा जानकर जो किसी जीव की हिंसा करता नहीं-करवाता नहीं (करनेवाले की अनुमोदना नहीं करता) वह जीव को धर्म में स्थित जानो।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

आगमोद्धारक का अगस्त 2024 का अंक ''आगमोद्धारकश्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा-विशेषांक''रहेगा। आपकी रचनाएं भेजिए।

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

वर्ष 29 | आषाढ़-श्रावण | जुलाई -2024 | अंक 07 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2024-2026

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-
डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

प्रति, बुक पोस्ट
श्रीमान् ....

....

....

स्टाम्प
टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897